तित्थयर ISBN-2277-7865

वर्ष – 48 अंक – द्वितीय जुलाई–2022

॥ जैन भवन ॥

JAIN BHAWAN
CALCUTTA

We are thankful for the financial assistance given towards the online publication of our Journals from a well-wisher at California , U.S.A. .

अनुक्रमणिका

1. **चीन में जैन धर्म**
   डा. लता बोथरा
2. **ओडिशा (उड़ीसा) की विस्मृत जैन विरासत**
   अर्पित शाह
3. कुतुबमीनार : जैन मानस्तम्भ या सुमेरू पर्वत ?
   प्रो डॉ.अनेकांत कुमार जैन
4. लोक की विसंगतिरहित विषय -वस्तु
   डॉ. जीवराज जैन

आवरण पृष्ठ – सरस्वती प्रतिमा , फतेहपुर सीकरी , उत्तरप्रदेश

Editorial Board –

Dr.N.Parson

Dr.Sulekh Jain

Dr.J.B. Shah

Prof.G .C.Tripathi

Shri Pradip Nahata (co-ordinator)

Titthayar is accessible at our Website –
www.jainbhawan.in

For articles , reviews and correspondence kindly contact –

Dr.Lata Bothra

Chief Editor

Mobile no-9831077309,

E mail – latabothra13@yahoo.com ,
latabothra@gmail.com

संपादन

डा.किरन सिपानी

चीन में जैन धर्म

चीन की संस्कृति को विश्व परिप्रेक्ष्य में अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं प्राचीन माना जाता है। आज चीन का नाम बौद्ध धर्म से जुड़ा हुआ लगता है लेकिन बौद्ध धर्म चीन में लगभग दूसरी शताब्दी से प्रारम्भ हुआ था। उससे पूर्व यहाँ पर कन्फ्यूशियस का धर्म तथा उससे भी पूर्व ताओ धर्म जिसे आत्मधर्म भी कहते है प्रचलित था। जिन, श्रमण तथा व्रात्य परम्परा के साथ ताओ धर्म की परम्परा जुड़ी हुई है। जैन मान्यतानुसार तीर्थंकरों को जिन और और बुद्ध दोनों ही कहा जाता है। उसी प्रकार बौद्ध धर्म में बुद्धों को जिन कहा गया है। चीन में आज भी तीर्थंकरों को बुद्ध कहने की परम्परा देखी जा सकती है। चीन में सैकड़ों वर्षों तक जिन वंश का साम्राज्य रहा है। वहाँ के प्रान्तों के यदि प्राचीन नाम खोजे जाये तो जैन धर्म के प्राचीन इतिहास की जड़े वहाँ देखने को मिलेगी। उदाहरण के तौर पर– चीन के साक्षी प्रान्त का प्राचीन नाम जिन प्रान्त था। चीन के सिकियांग क्षेत्र को Jin-Jian और तिब्बत को Ji-Jian कहते है। जियांन शब्द और जिन का अर्थ एक ही होता है। भारत में प्रचलित जैन शब्द भी जिन से ही निकला है। जिन व्रात्य और श्रमण शब्द का व्यवहारिक प्रयोग तिब्बत और चीन में जितना प्रचलित है उसे देखकर यह लगता है कि इन शब्दों का उत्पत्ति स्थल वहीं रहा होगा।

इश्वाकू और सूर्य वंश का प्रादुर्भाव ऋषभ परम्परा से हुआ। चीन में 1500 B.C. में Shang Dynesty शासन करती थी। ये सूर्यवंशी क्षत्रिय थे जो श्रमण संस्कृति का पालन करते थे। पश्चिमी तिब्बत में प्राचीन Shang Shung Civilization का जो वर्णन मिलता है और जिन्हें Bonpo धर्म से संबंधित माना गया है। ये भी व्रात्य क्षत्रिय थे। इसके बाद Hsia वंश का शासन आता है। ये भी इक्ष्वाकू सूर्य वंशी थे। Kiang Han प्रान्त के Su Chan city में एक बहुत बड़ा मंदिर है जिसमें भूत, भविष्य और वर्तमान के बुद्धों की मूर्तियाँ है जो जैन धर्म में भूत, वर्तमान और भविष्य के तीर्थंकर चौबीसी के अनुसार है। Dragon चीन का प्रमुख धार्मिक प्रतीक है जो तेइसवें तीर्थंकर पार्श्वनाथ के प्रभाव को परिलक्षित करता है। पार्श्वनाथ का प्रभाव भारत में ही नहीं अपितु सभी क्षेत्रों में रहा है। Marco Polo ने अपने विवरण में लिखा है कि Hang Chau शहर की प्रमुख मूर्ति कमल पर प्रतिष्ठित है। Quang Zhouk के Janjia Ochang में जो मूर्ति मिली है वो भी तीर्थंकर मूर्ति ही है। चीन में Monkey God की मान्यता है। चीन और तिब्बत के लोग वानर को अपना पूर्वज मानते हैं। चौथे तीर्थंकर अभिनन्दन स्वामी का लांछन कपि है।

चीन में होन्जो शहर को हनुमान से संबंधित माना जाता है। पांचवें तीर्थंकर सुमतिनाथ का लांछन चकवा और छठे तीर्थंकर पद्मप्रभु का प्रतीक लालकमल माना जाता है जो कि चीन की बौद्ध प्रतिमाओं में परिलक्षित होता है। वहाँ पर तीर्थंकर केवलज्ञानी, तत्त्वज्ञानी, आचार्य या साधारण ज्ञानी सभी को बुद्ध कहने का प्रचलन है जैसे- Little Buddha, Big Buddha, Master Buddha, Disciple Buddha आदि। चीन में कहीं-कहीं स्वस्तिक जैन परम्परानुसार मिलता है जो सामान्यतः वहाँ इस रूप में नहीं होता। उत्तरी चीन की प्राचीन गुफओं में जो प्राचीन मूर्तियाँ पायी गयी वे लगभग सभी तीर्थंकर मूर्तियाँ है।

चीन की Dunhang Caves, Yangang Caves और Mangao Caves आदि में भी तीर्थंकर मूर्तियाँ देखी जा सकती हैं। Guang Zhou के Six Banyan Trees Pagoda में महावीर हॉल के अन्दर तीर्थंकर मूर्तियाँ आसीन है। चीनी साहित्य में प्राचीन श्रमण (Wu) राजाओं का वर्णन प्रागैतिहासिक काल में मिलता है। उनकी राजधानी Sozhow थी जिसके पास Tiger Hill था। Guang Zhou के Hualin Temple प्राचीनतम मंदिरों में से एक है उसमें 500 अर्हतों की मूर्ति है जो भारत से आये थे ऐसा माना जाता है।

Xian का अर्थ है अमर। अतः Wu xian का अर्थ है Immortal Shraman। श्रमण को चीन में Xian Man कहते थे। 600 बी. सी. से 100 ई. पू. तक झाउ और हान वंश का शासन चीन में रहा। इस समय के चीनी ग्रन्थों में Wu श्रमणों का नाम 300 से भी अधिक बार प्राप्त होता है। लेखक De Groot ने लिखा है The Wu in Ancient Chaina no doubt held a place of a great importance.

चीन के Xiamen city में Nonputaou Temple हैं। ये बहुत ही प्रसिद्ध मंदिर माना जाता है। जिसका अर्थ है नाथपुत्त का मंदिर। बौद्ध साहित्य में भगवान महावीर के लिये नाथपुत्त का प्रयोग किया जाता था। इस मंदिर में महावीर हॉल भी है। ये मंदिर छठी शताब्दी में Tang Dynasty के समय में बना था। इसमें Guanyin Buddha की मूर्ति भी है। चीन में अम्बिका देवी

और पद्मावदी देवी की उपासना Guanyin और Kuanyin के रूप में की जाती है तथा इन दोनों देवियों की मूर्तियाँ चीन में सर्वत्र देखने को मिलती है।

चीन में बड़े बड़े बौद्ध विहारों के मुख्य हॉल का नाम महावीर हॉल देखने को मिलता है। वहाँ पूछने पर यह बताया गया कि महावीर बुद्ध का ही एक नाम है। Dague में भी हमें महावीर हॉल निर्मित मिलता है। Liaoning Province चीन में भी महावीर हॉल है। Hong-Cong के Fu Yung Shang Tsuen Wan के Nam Tin Chuk Temple में महावीर हॉल है। शंघाई के बौद्ध मंदिर में मुख्य हॉल का नाम भी महावीर हॉल है।

भगवान महावीर के निर्वाण के बाद 12 वर्षों में गौतम स्वामी कहाँ-कहाँ विचरण किये इसका उल्लेख नहीं मिलता इसी संदर्भ में एक महत्वपूर्ण जानकारी उपलब्ध हुई। स्केन्डेनेविया देशों में वहाँ के जनश्रुति में यह माना जाता है यहाँ गौतम आये थे। कर्नल टॉड ने लिखा है कि स्केन्डेवियन देशों में जो गौतम गये थे वे महावीर के शिष्य थे। चीन के और तिब्बत के साहित्य में गौतम स्वामी का वर्णन इन्द्रभूति के नाम से मिलता है जो उनका वास्तविक नाम था।

कर्नल जेम्स टाड के अनुसार Neminatha the 22nd of the Jinas and whose influence, Tod believed has extendd into China and Scandinavia shere he was worshipped under the names of Fo and Odin respectvely. चीन में फोबुद्ध नेमिनाथ को कहा गया है लेकिन आदिनबुद्धा आदिनाथ ऋषभदेव से संबंधित है। बींजिंग के शंख मंदिर में फोबुद्धा और भारत से आये 500 अर्हतों की मूर्तियां इसकी पुष्टि करती है।

गौतम स्वामी चीन होते हुए सिल्करूट द्वारा उन देशों में गये थे क्योंकि दक्षिण पूर्वी चीन में ऐसे अनेक दृष्टांत मिलते है जो गौतम स्वामी से संबंधित है। मैंने गौतम स्वामी की अष्टापद यात्रा की हूंबहू नकल दक्षिणी चीन की एक पहाड़ी पर देखी जहाँ सीढ़ियाँ बनी हुई थी और उनके किनारों पर तापस लोग खड़े हुए थे। उस पहाड़ी के ऊपर 72 गुफाएँ भी थी।

दक्षिणी चीन के एक प्रसिद्ध पर्वत जिसको गंग पर्वत भी कहते है वहाँ की एक गुफा से लौह यंत्रमय मानव अर्थात् रोबोट मिला है जिसकी ऊँचाई 9 फिट की है। यंत्रमय मानव का प्राचीन वर्णन जैन साहित्य में अष्टापद के संदर्भ में मिलता है। कलिकाल सर्वज्ञ हेमचन्द्राचार्य ने इसका उल्लेख किया है। यह भी कहा जाता है कि इस पहाड़ के ऊपर जब बर्फ पिघलती है तो मंदिर दृष्टिगोचर होते है। इसके पास में ही तीन पर्वत है जो अत्यन्त पूजनीय एवं पवित्र माने जाते है। इस क्षेत्र का नाम आडिन क्षेत्र है। अतः यह माना जा सकता है कि ये क्षेत्र ऋषभदेव से संबंधित है।

मौर्यकाल में सम्राट अशोक के पुत्र कुणाल जो अपनी विमाता के षड़यन्त्र के कारण अन्धा हो गया था उसने खोतान शहर की स्थापना की थी। खोतान से प्राकृत भाषा के आगम प्राप्त हुए हैं। कुषाण वंश का संबंध कुणाल से था। कनिष्क के भारत आक्रमण के समय उसकी सहायता उस समय के खोतान के राजा विजयकीर्ति ने की थी जो कुणाल के ही वंशज थे। मौर्य राजाओं का प्रभाव चीन तक था। मौर्य वंश का प्रतीक सिंह था और चीन नाम भी सिंह से आया है। चीन जाने के रास्ते को सिंहपथ भी कहा जाता था। अधिकतर मौर्य सम्राट जिन धर्म के अनुयायी थे। भरत के अष्टापद पर बनाये मंदिर को सिंहनिषधा प्रासाद कहा जाता है और अंतिम तीर्थंकर वर्द्धमान महावीर का प्रतीक भी सिंह था। चीन के बड़े-बड़े शहरों के प्राचीन इमारतों और दुकानों के बाहर दरवाजे के दोनों तरफ सिंह बनाने की परम्परा थी। जिसे आज भी देखा जा सकता है।

दक्षिणी चीन में ही एक पहाड़ी जिसके अन्दर गुफाओं में सैकड़ों जिन मूर्तियाँ मेरे देखने में आयी। यद्यपि देखने में ये बौद्ध मूर्तियाँ लगती थी लेकिन मूर्तियों के हाथों में ओघा होने के कारण ये जैन मूर्तियाँ कही जा सकती है। इस पहाड़ी के ऊपर चढ़ने पर वहाँ टोंके बनी दिखायी दी और इसका स्वरूप बिलकुल शिखरजी तीर्थ की तरह था। इस पर्वत के विषय में वहाँ की जनस्रुति है कि भारत के एक मुनि जिनका नाम हुइली बताया गया सोलह सौ साल पहले यहाँ आये थे और इस पर्वत को देखकर आश्चर्य चकित होकर उन्होंने कहाँ था कि यह पर्वत भारत के पर्वत की तरह है और तब से इस पर्वत को भारत से उड़कर आया हुआ पर्वत प्रचलित हो गया। इसी पर्वत के सामने बहुत बड़ा मंदिर अवस्थित है जिसमें सबसे पीछे जो मंदिर है उसमें कच्छप

के ऊपर बुद्ध मूर्ति खड़ी है तथा दोनों ओर राम और लक्ष्मण उनको नमन कर रहे है। यह बुद्ध मूर्ति निश्चित रूप से तीर्थंकर मुनि सुब्रत स्वामी की है जिनका लांछन कच्छप है और इनके शासन में ही राम और लक्ष्मण हुए थे। हमारी कैलास यात्रा के दौरान हमें जानकारी मिली कि मुनि सुव्रत स्वामी यहाँ इस क्षेत्र में आये थे। जिस प्रकार भारत में पर्वतों के ऊपर तीर्थ निर्माण करने की परम्परा है उसी प्रकार चीन में भी पहाड़ों के ऊपर अनेक तीर्थ है। इनमें जो ताओं धर्म से संबंधित है वे जैन तीर्थंकरों के है इसके अलावा चीन के प्रत्येक प्रान्त में सैकड़ों और हजारों की तादात में मूर्तियाँ और गुफाएँ मिलती है जिनमें बोद्ध मूर्ति और जैन मूर्ति दोनों ही है। पहली सदी में कालकाचार्य का वर्णन मिलता है जो वर्मा गये थे वर्मा में उस समय उनके शिष्य, प्रशिष्य और अनेक जैन साधु-साध्वी वहाँ विचरण करते थे ऐसा उल्लेख मिलता है। वर्मा से वे टॉन्कीन वियतनाम होकर चीन गये थे। इतिहासकार रमेशचन्द मजूमदार ने भी उनका उल्लेख करते हुए चीन में उन्हें कालाचार्य के नाम से प्रसिद्ध बताया था। आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि चीन में बड़े-बड़े बौद्ध विहारों के बाहर जो बौद्ध होटल है उनमें शुद्ध शाकाहारी भोजन मिलता है। प्याज और लहसुन वर्जित है एवं रात को खाना नहीं मिलता। यह परम्परा भारत के बौद्धों और तिब्बत के बौद्धों में आज नहीं मिलती जबकि चीन में यह परम्परा अभी भी विद्यमान है जो जैन धर्म के प्रभाव को ही परिलक्षित करती है। जैनियों में जो अष्टमंगल की परम्परा है लगभग वहीं हमें चीन, तिब्बत और मंगोलिया में भी मिलती है। चाइनीज साहित्य में इन अष्टमंगल प्रतीकों को शरीर के अवयवों के संग जोड़ा गया है। जैसे- - दो मछली-किडनी, पताका-फेफड़ें, गोल्डेन वील–हर्ट, शंख–गोलब्लेडर, पद्मफूल-लीवर, वास-स्टोमक और पैरासोल–स्प्लीन।

टोकियो विश्वविद्यालय के प्रोफेसर नाकामुरा को चीनी भाषा में एक जैन सूत्र मिला है जो इस बात का प्रमाण है कि शताब्दियों पहले चीन में जैन धर्म प्रचलित था। सर विलियम जोन्स के अनुसार चीनी लोग अपनी उत्पत्ति भारत से बतलाते है। प्रोफेसर लेकेनपेरि ने चीन शब्द की उत्पत्ति भारत से हुई बतलाई है। Acient chinese tradition नामक ग्रन्थ में यह वर्णन है कि ई. पू. 3000 में भारतीय व्यापारियों का एक दल चीन में गया था तथा उसने वहाँ अपने

उपनिवेश बसाये थे। लामचीदास जैन जो गोलालारे जाति के थे उन्होंने भूटान होते हुए चीन आदि देशों के जैन तीर्थों की यात्रा की थी। उन्होंने यह यात्रा 18 वर्ष में पूरी की थी। अपने विवरणों में वहाँ के जैन मन्दिरों का विस्तृत उल्लेख किया है। उनके अनुसार पेकिंग शहर में तुनावारे जाति के जैनियों के 300 मंदिर थे। इन मन्दिरों में कार्योत्सर्ग मुद्रा एवं पद्मासन मुद्रा में मूर्तियाँ थी। वहाँ के जैनियों के पास जो आगम ग्रन्थ है वह चीन की लिपि में हैं।

Marco Polo जो ईटालियन यात्री था जिसने अपनी चीन की यात्रा के विवरण में लिखा है कि (जिसका अनुवाद Sir Henry Yule ने किया है)। चीन के Canton नगर के एक मन्दिर का उल्लेख किया है जिसमें 500 मूर्तियाँ थी तथा वहाँ के मन्दिरों में Dragon प्रतीक रूप में रहता था जो जैन मन्दिरों में भी 23वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ के प्रतीक रूप में अंकित रहता है। दक्षिण चीन के यूनान प्रान्त में जो मंदिर मिले है उनकी शैली प्राचीन जैन मंदिरों की तरह है।

ये सही है कि आज तक जो इतिहास हमें पढ़ाया जाता रहा है वह अधूरा तथा एकांगी विचारधारा का पोषक है। भारतीय इतिहास में जैन साहित्य की उपेक्षा की जाती रही है जिसके कारण हम अपने प्राचीन इतिहास के सही स्वरूप से वंचित रहे हैं। चीन में जैन धर्म के प्रभाव के विस्तार के जो तथ्य हमें मिलते है वह ना सिर्फ इस दिशा में शोध के लिये प्रेरित करेंगे बल्कि हमें अपनी आदि संस्कृति तक पहुँचाने का मार्गदर्शन भी करेंगे ऐसा मेरा विश्वास है।

Dr. Lata Bothra
Jain Bhawan
P-25, Kalakar Street
Kolkata - 700 007
e-mail : latabothra13@yahoo.com
website : www. latabothra.in
Mobile : 9831077309

ओडिशा (उड़ीसा) की विस्मृत जैन विरासत

- अर्पित शाह

जंगलों, झरनों, नदियों, घाटियों, समुद्रतटों, झीलोंऔरमंदिरोंसेसमृद्ध,
ओडिशाअतीतकेवैभवऔरवर्तमानगौरवकाबहुरूपदर्शकहै.
आर्यऔरद्रविड़संस्कृतियोंकामिलनस्थलहोनेकेकारणऔरजनजातियोंकीआकर्षकजीवनशैलीसेरमणीयआत्मसातहोनेकेकारण, ओडिशाअपनीविशिष्टपहचानबनाएरखताहै. एकसमयमेंजोजैनधर्मकागढ़रहचूकाथा,
आजउसओडिशाकीजैनविरासतअबइतिहासकेपन्नोंमेंखोगईहै. प्राचीनयुगमेंजैनधर्मकीऐसीप्रमुखउपस्थितिथी, कि "आदित्यपुराण" नामकएकवैदिकपुराणनेकलिंग (प्राचीनयुगमेंओडिशा) को "अनार्यभूमि" (एकभूमिजहांधर्मस्थापितनहींहै) कीसूचीमेंरखा, जबकिजैनोंनेकलिंगकोएक२५आर्यभूमियों (जहाँधर्मकीस्थापनाहुईथी) मेंस्थानदिया.

ओडिशामेंजैनधर्मकानिम्नलिखितकालक्रमपायाजासकताहै -

- **~८५०ईसापूर्व -** प्राचीनजैनआगम,
  श्रीउत्तराध्यायनसूत्रमेंउल्लेखपायाजाताहैकि२३वेतीर्थंकरश्रीपार्श्वनाथभगवाननें८५०ईसापूर्वमेंइसक्षेत्रमेंविहारकियाकियाथाऔरराजाकरकंडुकोप्रतिबोधकरभिक्षुक (जैनसाधु) बनायाथा.
  व्यवहारभाष्यऔरहरिवाशपुराणजैसेजैनग्रंथोंसेयहभीपताचलताहैकिश्रीपार्श्वनाथभगवाननेताम्रलिप्ति (पश्चिमबंगालकातामलुक), कोपटाका (ओडिशाकाकुपारी, बालासोर) औरकुमारीपर्वत (ओडिशाकेउदयगिरीऔरखंडगिरि, भुवनेश्वर) जैसेस्थानोंमेंदेशनादीथी.
  इसीलिएलगभगईसापूर्व९शताब्दीकेआसपासओडिशामेंजैनधर्मकाप्रभुत्वस्थापितहुआ.

- **~ ५३०-५१०ईसापूर्व** - आचार्यहिमवंतक्षमाश्रमणद्वारा (~२-३वींशताब्दी) मेंरचितहिमवंतथेरावलीकेअनुसारमगधसाम्राज्यकेअधिपतिऔरप्रभुमहावीरकेपरमभक्तश्रेणिकबिंबिसारनेकुमारीपर्वत (उदयगिरिऔरखंडगिरि, भुवनेश्वर)
  कीतीर्थयात्राकीऔरवहांएकसुंदरजिनालयकानिर्माणकरवायाऔरश्रीआदिनाथभगवानकीसुवर्णप्रतिमाकीप्रतिष्ठाश्रीसुधर्मास्वामीकेहाथोंकरवाई. इसप्रतिमाको "कलिंगजीन" केरूपमेंजानाजानेलगाऔरकलिंगराज्यकीपूरीआबादीकीआस्थाकाकेंद्रबनगई.
  श्रेणिकराजानेकुमारीपर्वतपरजैनभिक्षुओंऔरभिक्षुणियों (साधुसाध्विओं) केउपयोगकेलिएगुफाओंकानिर्माणभीकरवाया.

- **५०९ईसापूर्व / ४६८ईसापूर्व -**भगवानमहावीरकेसंसारीमामाराजाचेटकवैशालीकेअधिपतिथे.
  हिमवंतथेरावलीकेअनुसारउनकेपुत्रशोभनरायकाविवाहकलिंगसम्राटसुलोचनकीपुत्रीसेहुआथा.
  कुणिकअजातशत्रुसेहारनेकेबाद, राजाचेटककीसत्ताचलीगईऔरपुत्रशोभनरायकलिंगभागगए.
  चूंकिकलिंगसम्राटसुलोचनकाकोईपुत्रनहींथा, इसलिएशोभनरायकोकलिंगकाराजाबनादिया.
  शोभनरायएकआदर्शजैनश्रावकथाऔरउनकेशासनकेदौरानपार्श्वप्रभुकीदेशनाभूमिकुमारीपर्वतकोएकप्रमुखतीर्थ बनादिया.

- **३७८ईसापूर्व -**हिमवंतथेरावलीकेअनुसारशोभनरायकेपांचवेउत्तराधिकारीचंद्ररायबने.
  उनकेसमयमेंआठवेनंदवंशकेसम्राटकैवर्तनंदनेकलिंगराज्यपरहमलाकिया,
  कुमारीपर्वतपरजिनमंदिरकोनष्टकरदियाऔरकलिंगजिनकीप्रतिमाकोउनकेसाथअपनीराजधानीपाटलिपुत्रलेग ए.

- **३५७ईसापूर्व -**
  हिमवंतथेरावलीकेअनुसारभगवानमहावीरकेनिर्वाणके१७०वर्षबादअंतिमपूर्वधरआचार्यभद्रबाहुस्वामीकुमारी पर्वतपरपधारेऔरनिर्जलउपवासद्वारासंथाराग्रहणकियाऔर१५दिनकेपश्चातउनकाकालधर्महुआ.

- **२८२ईसापूर्व -**हिमवंतथेरावलीकेअनुसारआर्यमहागिरीकुमारीपर्वतपरपधारे;
  वहांअनशनकरकालधर्मकोप्राप्तकिया.

- **२६५ईसापूर्व -**मौर्यसम्राटअशोकनेकलिंगसाम्राज्यपरयुद्धकरविजयप्राप्तकी.

- **२३६ईसापूर्व -**हिमवंतथेरावलीकेअनुसारआर्यसुहस्तीसुरी (सम्राटसंप्रतिकेगुरु) कुमारीपर्वतपरपधारे;
  वहांअनशनकरकालधर्मकोप्राप्तकिया.

- **२३२ईसापूर्व -**राजाअशोककीमृत्युकेबादकलिंगनेमौर्यसाम्राज्यसेस्वतंत्रताप्राप्तकी.
  हिमवंतथेरावलीकेअनुसारकलिंगकेशासक, वुड्ढराजा (वृद्धराज)
  नेवर्षाकालीनचातुर्मासकेदौरानजैनभिक्षुओंऔरश्रमणिओंकेउपयोगकेलिएकुमारीपर्वतपर११गुफाओंकानिर्माण करवाया.

- **१६५ईसापूर्व -**वुड्ढराजाकेपुत्र, महामेघवानभिक्षुराजखारवेलकलिंगकेराजाबने

- **१५७ईसापूर्व -** खारवेलनेमगधपरयुद्धकरशुंगवंशराजाबहसतिमिता/ पुष्यमित्रकोहराया.
  पाटलिपुत्रसेकलिंगजिनकीमूर्तिकोपुनःप्राप्तकरकलिंगलायागया.

- **१५६ईसापूर्व -**हिमवंतथेरावलीकेअनुसारखारवेलनेकुमारीपर्वतपरजिनालयकाजीर्णोद्धारकरवायाऔरआचार्य श्रीसुस्थितसुरीऔरआचार्यश्रीसुप्रतिबुद्धसूरीकेहाथोंकलिंगजिनकीप्रतिमाकोपुनःप्रतिष्ठितकिया.
  दोनोंआचार्योंनेवहांपवित्र "सूरीमंत्र" केएककरोड़मंत्रोच्चारकाजापकिया.

- **१५६ईसापूर्व -**हिमवंतथेरावलीकेअनुसारजैनआगमोंकेज्ञानकोसंरक्षितरखनेकेलिए,
  खारवेलनेदृष्टिवादआगमकेसंकलनकेलिएएकआगमवांचना (परिषद) काआयोजनकिया.
  खारवेलनेआचार्यबलीस्सह, आचार्यबोधिलिंग, देवाचार्य, आचार्यधर्मसेन,
  आचार्यनक्षत्रकेसाथ२००जिनकल्पीभिक्षुओं (जोतीर्थंकरोंकेआचारऔरतपस्याकाअनुकरणकरतेथे)
  औरआर्यसुस्थितसुरी, आचार्यसुप्रतिबुद्धसूरी, आचार्यउमास्वती,
  श्यामाचार्यऔर३००स्थाविरकल्पीभिक्षुओंकोआमंत्रितकिया.
  आर्यापोइणीकेसाथ३००भिक्षुणियोंऔर७००श्रावकों-
  श्राविकाओंकेसमक्षदृष्टिवादकासंकलनहुआजिससेकालांतरमेंनिम्नलिखितशास्त्ररचेगए -
    - आर्यश्रीश्यामाचार्यद्वारा "प्रज्ञापनसूत्र"
    - आर्यश्रीबलीस्सह द्वारा "अंगविद्यासूत्र" (विद्याप्रसादनामकएकपूर्वसे)
    - आचार्यउमास्वतीद्वारा "तत्वार्थसूत्र"

- **१५६ईसापूर्व -**
  हिमवंतथेरावलीकेअनुसारखारवेलनेकुमारीपर्वतकीदोनोंपहाड़ियोंपरजैनभिक्षुओंकेलिए(उदयगिरिपरजिनकल्पीसाधुओंऔरखंडगिरिपरस्थविरकल्पीसाधुओंकेलिए)गुफाओंकानिर्माणकरवाया.

- **१५२ईसापूर्व -**हाथीगुम्फशिलालेखकोकुमारीपर्वत (उदयगिरी)
  परअंकितकियागयाजिसमेंप्राकृतभाषामेंखारवेलकेजीवनकाउल्लेखहै. "नमोअरहंतानं, नमोसर्वसिद्धानम"
  सेइसशिलालेखकीशुरुआतहोतीहै. शिलालेखबताताहैकी -
    - अपनेशासनके८वेंवर्षमें,
      खारवेलनेआजीवकसंप्रदायकेआराधकोकोबराबरगुफाओंसेनिष्कासितकियाऔरउनकेशिलालेखोंकोविकृतकरदिया.

- अपनेशासनकालके१२वेंवर्षमें,
  खारवेलनेमगधपरआक्रमणकरबहसतिमिताकोअपनेचरणोंमेंझुकायाकलिंगजिनकीप्रतिमाकोपुनःप्राप्त किया.
- अपनेशासनकालके१३वेंवर्षमें, कुमारीपर्वतपर,
  खारवेलनेजैनभिक्षुओंकोसम्मानपूर्वकश्वेतवस्त्रआदिकोवोहराया.
- अपने "जीव" और "देह" कीप्रकृतिकोमहसूसकियाऔरजैनसाधुओंकेपरिषदकाआयोजनकिया.
  २५लाखखर्चकरअर्हतजिनालयजीर्णोद्धारकियाऔरअंगआगमोंकोसंकलितकिया

- **~१५०ईसापूर्व -**खारवेलकेबादराजाकुदेपसिरीकलिंगकेशासकबने.
  उन्होंनेभीकुमारीपर्वतपरजैनमुनियोंकेलिएगुफाएंबनवायीं. कुमारीपर्वत (उदयगिरी)
  केमंचापुरीगुफाकेशिलालेखोंमेंउनकानामकाउल्लेखहै.

- **ईस्वीकीपहलीशताब्दी -**उत्तरीभारतमेंतीव्रअकालकेकारण,
  दसपूर्वधारीआचार्यवज्रस्वामीसमुद्रकेकिनारेबसेहुएपुरीमेंपधारें,जहांश्रीजीरावलापार्श्वनाथभगवानकाएकजि नालयथा. उन्होंनेसफलतापूर्वकस्थानीयबौद्धराजाकोजैनधर्मसेप्रतिबोधितकिया.
  वर्तमानमेंजगन्नाथपुरीमंदिरकीबाहरीदीवारोंपरएकजैनमूर्तिदेखीजासकतीहै.

- **दूसरी - तीसरीशताब्दी -**मुरुंडजनजाति
  (जिनकाशासनबिहारकेछोटानागपुरक्षेत्रसेलेकरओडिशाकेगंजमजिलेतककेक्षेत्रपरथा)
  राजाओंनेजैनधर्मकासंरक्षणकिया.
  भुवनेश्वरकेपासशिशुपालगढ़सेखुदाईमेंमिलेसोनेकेसिक्कोंसेपताचलताहैकिमुरुंडजनजातिकेमहाराजाधिराजधर्म दमदारजैनधर्मकेसंरक्षकथे. इसतथ्यकीपुष्टिजैनग्रंथप्रबोधचिंतामणिसेहोतीहै.
  मुरुंडजनजातिकेअंतिमशासकनेभीजैनधर्मकापालनकियाऔरनिर्ग्रंथपरंपरा (जैनधर्म) कीआराधनाकी.

- **चौथीशताब्दी** - राजाशत्रुभंजवर्तमानओडिशाकेक्योंझरजिलेकेअधिपतिथे.
  क्योंझरजिलेकेआसनपटशिलालेखमेंउल्लेखहैकीशत्रुभंजनेबौद्धभिक्षुओंऔरजैननिर्ग्रंथोंकोबड़ीमात्रामेंदानकिया परन्तुवेस्वयंब्राह्मणधर्मकेअनुयायीरहे.

- **सातवींशताब्दी -** बौद्धयात्रीह्वेनसांगकेउल्लेखोंमेंपायाजाताहैकीकलिंगमें१०बौद्धसंघराम (मठ)
  थेजिनमें१००आराधकथेपरन्तुअन्यसंप्रदायके५००मंदिरथे, जिनमेंसेअधिकांशनिर्ग्रंथ (जैन) थे.
  वहबतातेहैंकिकलिंगमेंबौद्धप्रतिमाओंकीसंख्यालगभग१००थीजबकि (जैन)

तीर्थंकरोंकीसंख्या१०००सेअधिकथी. शैलोद्भव वंशकेशिलालेखजिन्होंनेकांगोडाक्षेत्र (वर्तमानमेंओडिशाराज्यमेंगंजम, खोरधाऔरपुरीजिलोंकेकुछहिस्सों) परशासनकिया, यहसूचितकरतेहैंकिजैनोंनेसर्वोच्चज्ञानप्राप्तकरनेकेलिएअत्यधिकतपस्याऔरतपस्याकापालनकिया. बाणपुरताम्रपत्रउल्लेखहैकिशैलोद्भववराजाधर्मराज (द्वितीय) उर्फ श्रीमानभिताकीपत्नीकल्याणदेवीएकजैनथींऔरउन्होंनेजैनभिक्षुओंअर्हताचार्यनसीचंद्रऔरउनकेशिष्यएकसटा का (एकवस्त्रधारी) प्रबुद्धचंद्रकेलिएअनुदानदिया.

- **१०वीं - ११वींशताब्दी -**
  सोमवंशीराजवंशनेजैनधर्मकोशाहीसंरक्षणदियाऔरभुवनेश्वरसहितविभिन्नस्थानोंपरजैनमंदिरोंकानिर्माणकिया.
  लालतेंदुकेसरीगुफाऔरखंडगिरीपहाड़ीकीनवमुनिगुफाकेतीनशिलालेखोंकेअनुसारसोमवंशीवंशकेराजाउद्योतकेशरीनेकुमारीपर्वत (खंडगिरि) परगुफामंदिरोंकानिर्माणकियाऔर२४तीर्थंकरोंकीमूर्तियांस्थापितकीं.

- **१२वींशताब्दी -**कलिंगमेंगंगावंशकीसत्ताप्रारम्भहुईजोवैष्णवधर्मकेअनुयायीथे.
  अनंतवर्मनछोड़गंगानेपुरीमेंश्रीजगन्नाथकेमंदिरकानिर्माणकरवाया. भोगपुरगांव (विशाखापट्टनमजिलेकेभीमिलीपट्टनमतालुक)
  सेएकशिलालेखसेपताचलताहैकि११७८मेंउत्कलराजाकेमंत्रीश्रेष्ठिकममनायकनेतीर्थंकरप्रभुकीप्रतिमाकोराजराजाजिनालयनामकमंदिरमेंरामरामगिरी (वर्तमानरामतीर्थम) मेंप्रतिष्ठितकिया.

इसकेपश्चात्शाहीसंरक्षणकीकमीऔरअन्यसंप्रदायोंकेअसहिष्णुरवैयेकेकारणइसक्षेत्रमेंजैनधर्मकीउपस्थितिधीरे-धीरेकमहोगई.

ओड़िशामेंजैनधर्मकेपुरातात्विकसाक्ष्य

शोधपत्रों, संग्रहालयनिर्देशिकाओं,
ऐतिहासिकप्रकाशनोंऔरपुरातत्वसमाचारपत्रोंमेंउपलब्धदस्तावेजसंसाधनोंकेआधारपर,
ओड़िशाके१२०सेअधिकगांव/शहरोंमेंजैनपुरातात्विकअवशेषपाएगएहैं. ओडिशाके३०जिलोंमेंसे, १५जिलोंमेंतीर्थंकरों, यक्ष - यक्षिणी, जैनशिलापट्टआदिजैनऐतिहासिकअवशेषपाएगएहैं. कोरापुट, जाजपुर, बालासोर,
कटकऔरखोरधाजिलोंमेंलगभग८०%
जैनअवशेषपाएगएहैं.परन्तुइनमेंसेअधिकांशमूर्तियोंकोहिंदूमंदिरोंमेंरखागयाहैऔरभैरव, ग्रामदेवता-

देवीआदिकेरूपमेंइनकीपूजाकीजातीहै. कुछअवशेषराज्यकेसंग्रहालयोंमेंअच्छीतरहसेसंरक्षितहैं. दुर्भाग्यसे, कईमूर्तियां, जिन्हेंस्थानीयदेवताओंकेरूपमेंपूजाजाताहै, उनकेसामनेपशुबलिभीदीजातीहै.

मयूरभंजजिला

मयूरभंजजिलेकेबारीपदा, खिचिंगऔरबादसाहीशहरोंमेंप्रमुखजैनपुरातात्विकस्थलपाएजातेहैं.
बारीपदाकेजगन्नाथमंदिरमेंतीनजैनप्रतिमाऐंहैं, जिनमेंसेदोप्रतिमाऐं९वीशताब्दीकीहैं.
खिचिंगकेमांकिचकेश्वरीमंदिरकीबाहरीदीवारपरएकजिनकल्पीजैनभिक्षुकोएकराजा/राजकुमारकोउपदेशदेतेहुएदिखाया गयाहै. अनेकजैनप्रतिमाओंकोबारीपदाराज्यसंग्रहालयऔरखिचिंगसंग्रहालयमेंभीसंरक्षितकियागयाहै.

क्योंझरजिला

इसजिलेमेंसबसेउल्लेखनीयस्थलपोदासिंगिडीहैजहांकईतीर्थंकरप्रतिमाएंखुदाईमेंप्राप्तहुईहै.
अधिकांशप्रतिमाएं७वींसे१२वींशताब्दीकीहैऔरउन्हेंभुवनेश्वरकेए.एस.आई.
औरओडिशाराज्यसंग्रहालयद्वाराबनाएगएजैनहेरिटेजस्कल्पचरशेडमेंसंरक्षितकियागयाहै.
स्थानीयलोगोंद्वारापोदासिंगीकेरामचंडीमंदिरमेंतीर्थंकरोंकेसाथअंबिकाकीएकदुर्लभप्रतिमेकीपूजाकीजातीहै.
आनंदपुरउपखंडमेंबौलापहाड़ीमेंएकजैनमंदिरहैजिसेयोगिछाताकेनामसेजानाजाताहै; पहाड़ीमेंरॉक-कटगुफाएंभीहैं, जिनकाउपयोगजैनभिक्षुओंद्वाराकियाजाताथा.

बालासोरजिला

१६जैनपुरातात्विकस्थलकेसाथओडिशामेंजैनऐतिहासिकअवशेषोंकीतीसरीसबसेबड़ीसंख्याबालासोरजिलेमेंहै.
अदागांवकेनारायणमंदिरऔरअजोध्याकेपुरातत्वशेडअधिकांशप्रतिमाओंकोसंरक्षितकरतेहैं.
परन्तुअफसोसकीबातहैकिनारायणमंदिरमेंरखीहुईप्रतिमाएंपूरीतरहसेउपेक्षित, खंडितअवस्थामेंपड़ीहैं.

भद्रकजिला

यद्यपिइसजिलेमेंकेवलतीनजैनस्थलोंकीपहचानकीगईहै,
इनमेसेचरम्पाएकबहुतमहत्वपूर्णस्थलहैक्योंकियहाँसेकईमध्ययुगीनजैनप्रतिमाऐंप्राप्तहुईहैं.
९वींशताब्दीकीभगवानआदिनाथकीएकविशाल६फीटऊंचीप्रतिमा,
श्रीअजीतनाथऔरश्रीशांतिनाथभगवानकीअनूठीप्रतिमाऐं (जिसमेंकटेहुएनिशानहैं) ओडिशाराज्यसंग्रहालय,

भुवनेश्वरमेंसंरक्षितहै.
चरंपागांवमेंस्थानीयलोगोंद्वाराश्रीपार्श्वनाथभगवानकीएकमूर्तिकोखरकियाठकुरानीकेरूपमेंपूजाजाताहै.

जाजपुरऔरकेंद्रपाड़ाजिले

जाजपुरजिलेमेंजैनस्थलोंकीदूसरीसबसेबड़ीसंख्याहै (२३पुरातात्विकजैनस्थल). प्रमुखस्थलोंमेंजाजपुरशहर, बरुआडी, नरसिंहपुर, कांताबानिया, बांसाबादी, कुआंसाआदिशामिलहैं. नारायणचौकपर,
श्रीपार्श्वनाथभगवानकोअनंतवासुदेवकेरूपमेंपूजाजाताहै,
जबकिएकअज्ञाततीर्थंकरप्रतिमाकोनरसिंहपुरमेंविष्णुकेरूपमेंपूजाजाताहै.
हंसेश्वरमंदिरऔरसीतलेश्वरमंदिरमेंकईजैनप्रतिमाएंहैं.
नरसिंहपुरमेंएकचतुर्मुखीप्रतिमाकाउपयोगबगीचेकेगमलेकेरूपमेंकियागयाहै.
नयागढ़केखेतोंमेंभीकईचतुर्मुखीप्रतिमाएंबिखरीहुईपाईजातीहै.

कटकजिला

कटकजिलेके१२अलग-अलगशहरों/कस्बोंमेंफैलेजैनपुरातात्विकस्थलपाएजातेहैं.
कटककेपासप्रतापनगरीमेंअधिकतमसंख्यामेंजैनप्रतिमाएंसंरक्षितहैंऔरसाइटपरएकछोटासंग्रहालयबनायागयाहै.
जहाँचौद्वारमेंअधिकांशमूर्तियोंकोबुरीतरहसेचित्रितकरशिवकेरूपमेंपूजाजाताहै,
पार्श्वनाथभगवानकीएकप्रतिमाकोभानपुरगाँवमेंअनंतवासुदेवकेरूपमेंपूजाजाताहै.
कटकमेंदिगंबरऔरश्वेतांबरदोनोंसंप्रदायोंकेमंदिरहैं,
लेकिनदिगंबरजैनमंदिरमें११वींशताब्दीकीअनेकसुंदरप्राचीनमूर्तियोंकोसंरक्षितकियागयाहै.
नियालीगाँवकेशोभनेश्वरमंदिरकीदीवारोंऔरस्तंभोंमेंकायोत्सर्गमुद्रामेंतीर्थंकरोंकीप्रतिमाएंदिखाईदेतीहैंजोबतातीहैंकिय हप्राचीनकालमेंएकजैनमंदिरथा.

जगतसिंहपुरजिला

जगतसिंहपुरजिलेमेंनुआधाना, सहदा, नासिकआदिप्रमुखपुरातात्विकजैनस्थलहैं.
नुआधानामेंएकजैनप्रतिमाकीग्रामदेवती (ग्रामदेवता) केरूपमेंपूजाकीजातीहैऔरमूर्तिकेसामनेपशुबलिदीजातीहै.

खोरधाजिला

पूरेओडिशाराज्यकेसबसेमहत्वपूर्णजैनकेंद्र, कुमारीपर्वत (उदयगिरि - खंडगिरीगुफाओं)
केसाथखोरधाजिलेमेंअन्य१२जैनपुरातात्विकस्थलस्थितहैं.
भुवनेश्वरकेपासशिशुपालगढ़शहरकोपूर्वमेंतोसालीकेनामसेजानाजाताथाऔरश्रीमहावीरस्वामीभगवाननेवहांविहारकिया था. भुवनेश्वरमेंमंदिरोंकीदीवारोंसेजैनतीर्थंकरोंकीमूर्तियोंकेटुकड़ेपाएगएहैं.
भुवनेश्वरशहरकाओडिशाराज्यसंग्रहालयविभिन्नजैनकलाकृतियोंकोसंरक्षितकरताहै.
बुद्धपाड़ामेंसोमनाथमंदिरकीबाहरीदीवारोंपरएकतीर्थंकरकीश्वेतांबरमूर्तिभीदेखीजासकतीहै. पंचगाँवमेंअर्हतो, गणधरोऔरपूर्वधरोंकोदर्शानेवालाएकशिलापट्टप्राप्तहुआहै.

नयागढ़, बोलांगीरऔरबौधजिले

ओडिशाकेपश्चिमीभागोंमेंजैनधर्मकीविरलउपस्थितिदेखीजासकतीहै.
इनतीनजिलोंमेंकेवलचारजैनस्थलोंकीपहचानकीगईहै.
श्रीपार्श्वनाथभगवानकीएकटूटीहुईमूर्तिबलांगीरकेप्रसिद्धहरिशंकरमंदिरमेंपाईजातीहै.
कईजैनप्रतिमाएंरणपुरजिलेकेरामनाथमंदिरऔरबौधकेरामनाथमंदिरकीदीवारोंमेंपाईजातीहैंजोइंगितकरतीहैंकियहपहलेजैनमंदिरथे.

पुरीजिला

पुरीमेंजगन्नाथमंदिर (जिसकीबाहरीदीवारोंपरजैनप्रतिमाअंकितहै) केअलावाजैनपुरातात्विकअवशेषबराला, बेगुनियापाड़ा, पिंडोला, लताहारनआदिमेंपाएजातेहैं.
जिओलोसासनमेंतीर्थंकरकेसाथअंबिकाकीभगवतीकेरूपमेंपूजीजातीहै.

कोरापुटऔररायगडाजिले

जैनऐतिहासिकअवशेषोंकीसबसेअधिकसंख्याओडिशाकेदक्षिणीभागमेंरहेकोरापुटजिलेमेंहैजोआंध्रप्रदेशऔरछत्तीसगढ़के साथअपनीसीमासाझाकरताहै. कोरापुटजिलेमेंमें३१पुरातात्विकजैनस्थलहैंजबकिरायगढ़मेंएकजैनऐतिहासिकस्थलहै.
सुनबेड़ासे१६किलोमीटरऔरकोरापुटसे३४किलोमीटरदूरसुबेईगाँवमेंजैनमंदिरकेअवशेषहैं,
जिसमेंतीर्थंकरोंकीदुर्लभप्रतिमाएंहैं. अन्यमहत्वपूर्णस्थलोंमेंकचेला, जमुंडा, जेयपोरशामिलहैं/
रायगडाकेबिरिपदागांवमेंहालकीखुदाईमें९वींशताब्दीकीविभिन्नधातुप्रतिमाएंप्राप्तहुईहै.

ओडिशाके१२३शहर/गांवजहाँजैनपुरातात्विकअवशेषपाएजातेहैंउसकीपूरीसूचीइसप्रकारहै-

Sl.	City/ Village	District	Location of Jain historical remains
1	Baripada	Mayurbhanj	1. Jagannath Temple 2. Baripada District Museum
2	Khiching	Mayurbhanj	1. Maa Kichakeswari Temple Khiching 2. Khiching Museum
3	Badasahi	Mayurbhanj	Ruins of Jain Chaturmukhi Shrine
4	Podasingidi	Keonjhar	1. Jain Heritage Sculpture Shed, ASI 2. Ramachandi Temple
5	Ghasipur/ Chasipur	Keonjhar	Jaina Sculpture Shed , ASI
6	Anandapur	Keonjhar	Baula hill ranges - Yogichhata Temple
7	Bancho	Keonjhar	Unknown
8	Ada	Balasore	Narayan Mandir, Ada
9	Ajodhya	Balasore	Archaeological shed - State Archaeology Dept
10	Puruna	Balasore	Baneshvar Temple, Puruna
11	Bhimpur	Balasore	Private collection of Baikunth Nath Dey
12	Balighat	Balasore	Kali Mandir, Balighat
13	Kabara	Balasore	1. Bhramani devi Shrine 2. Barakhanda Temple
14	Balasore	Balasore	1. Biswanatha Temple Complex 2. Gada Chandi Temple
15	Kansa	Balasore	Gramdevti Shrine
16	Majhikia	Balasore	Viswesvaraya Temple, Majhikia
17	Nilagiri	Balasore	Mandalshri Shrine, Nilagiri
18	Jaleswar	Balasore	1. Martasol 2. Panchaghanta 3. Sasanbard
19	Basta	Balasore	Unknown
20	Bardhanpur	Balasore	Unknown
21	Pundal	Balasore	Unknown
22	Kupari	Balasore	Unknown
23	Gundel	Balasore	Unknown
24	Khadipada	Bhadrak	Kailashesvara Temple, near Khadipada
25	Charampa	Bhadrak	1. Odisha State Museum, Bhuvaneswar 2. Image of Parshwanath converted into Kharakhia Thakurani art Charampa
26	Kushan Nagar	Bhadrak	Worshipped as local deity
27	Jajpur	Jajpur	Hamsesvara Temple
28	Baruadi	Jajpur	1. Chandi Devi Temple 2. Hatkesvara Temple

Sl.	City/ Village	District	Location of Jain historical remains
29	Sitalesvara	Jajpur	1. Basulei Thakurani Temple 2. Jatesvara Temple 3. Sitalesvara Temple
30	Narayana Chowk	Jajpur	Parsvanatha worshipped as Ananta Vasudev
31	Dasasvamedh Ghat	Jajpur	Ganesh Temple
32	Sana Bazar	Jajpur	Dharmesvara Temple
33	Narasinghpur	Jajpur	Unknown
34	Kartar	Jajpur	Jagulei Shrine
35	Chandigola	Jajpur	Chandesvara Temple
36	Shoradiha	Jajpur	Phalesvara Temple
37	Hatadiha	Jajpur	Jaina Sculpture Shed
38	Kantabania	Jajpur	Barunei Temple
39	Bansabadi	Jajpur	Jagulei Gramadevati Temple
40	Taranga Sagarpur	Jajpur	Unknown
41	Champeipal	Jajpur	Budhi Jagulei Shrine
42	Sripura	Jajpur	Bhandesvara Temple
43	Kuansa	Jajpur	Mangala Temple
44	Tentulidiha	Jajpur	Unknown
45	Madhupur	Jajpur	Jagannath Temple
46	Naguan	Jajpur	1. Brahmanidevi Temple 2. Shiva Temple 3. Gramdevati Shrine
47	Ratnagiri	Jajpur	Unknown
48	Kamudei Pitha	Jajpur	Unknown
49	Nayagarh	Jajpur	Multiple chaturmukhas scattered in fields
50	Kuanrapur	Kendrapara	Harishankareshwara Temple
51	Cuttack	Cuttack	Digambar Jain temple, Choudhury Bazar
52	Baidyesvara	Cuttack	Dhabalesvar Temple, Baidyesvara
53	Pratapnagari	Cuttack	Jain Heritage Museum
54	Bhanapur	Cuttack	Parshwanath Bhagwan worshipped as Anantavasudeva, Anantavasudeva Temple, Bhanapur
55	Lendura-Bhagawanpura	Cuttack	Chaturmukhi Shrine
56	Choudwar	Cuttack	1. Siva Temple, Servants of India Society. Rushabdev prabhu idol completely converred into Shiva idol 2. Ward No. 4 3. Matha Sahi 4. Kapaleshwara Temple 5. Bharandi

Sl.	City/ Village	District	Location of Jain historical remains
			6. Radhabhallava Temple 7. Chitresvara Temple
57	Athagarh	Cuttack	Tirthankar image carved out of natural laterite bed
58	Kantola	Cuttack	Adyashakti Temple
59	Adaspur	Cuttack	1. Swapnesvara Temple, 2. Nilkantheshwar Temple
60	Mahatabpari	Cuttack	Rushi Thakurani Shrine
61	Nibharan	Cuttack	Gramesvara Temple
62	Niali	Cuttack	Sobhanesvara Temple
63	Nuadhana	Jagatsinghpur	1. Kapilesvara Temple 2. Archaeological mound 3. Gramdevati Shrine
64	Sahada	Jagatsinghpur	Subamesvara Temple
65	Nasik	Jagatsinghpur	Khandeswara Temple
66	Manapur-Gadhama	Jagatsinghpur	Unknown
67	Kundeswar	Jagatsinghpur	Gatesvara Temple
68	Anla	Jagatsinghpur	Sola Pua Maa Temple
69	Udaygiri Hill	Khordha	Caves under ASI
70	Khandgiri Hill	Khordha	Caves under ASI Digambar Jain temple
71	Bhuvaneshwar	Khordha	1. Orissa State Museum 2. Brahmesvara Temple
72	Sisupalgarh	Khordha	Ruined Temple
73	Jaipurpatana	Khordha	Nistaruni Temple
74	Sunderpada	Khordha	Kalia-Sani Gramadevati Shrine
75	Jamukoli	Khordha	Baghei Devi Temple
76	Panchagaon	Khordha	Jaina Sculpture Shed
77	Banapur	Khordha	Daksha-Prajapati Temple
78	Budhapada	Khordha	Somanath Temple
79	Bagalpur	Khordha	Jaina Sculpture Shed
80	Kenduli	Khordha	1. Barunei Gramadevati Shrine 2. Jajnesvari Temple
81	Ranpur	Nayagarh	Svapnesvara Temple
82	Gobindpur	Nayagarh	Kaunri Devi Temple
83	Gandhamardhan hills	Bolangir	Harishankar Temple, Balangir
84	Boudh	Boudh	Ramnatha Temple Complex
85	Puri	Puri	1. Jagganath Temple 2. Puri District Museum
86	Jiolo Sasana	Puri	Bhagavati Temple. Ambika with Neminath Bhagwan worshipped as Bhagavati

Sl.	City/ Village	District	Location of Jain historical remains
87	Pindola	Puri	Bageswari Temple
88	Beguniapada	Puri	Amrutesvara Temple
89	Barala	Puri	Balunkesvara Temple
90	Lataharan	Puri	Unknown
91	Naiguan	Puri	Ambikei Shrine, Puruna Osian
92	Subei	Koraput	Jain Temples
93	Kachela	Koraput	Jain Temple ruins
94	B.Singhpur	Koraput	1. Sankulei Shrine 2. Sculpture Shed
95	Boriguma	Koraput	Bhairav Temple
96	Jamunda	Koraput	Jaina Sculpture Shed
97	Kamata	Koraput	Unknown
98	Charmula	Koraput	Unknown
99	Jeypore	Koraput	1. Bhagwati Temple 2. Gangadei Temple 3. Kali Temple 4. Jeypore District Museum
100	Phupugaon	Koraput	Phupugaon, Kundra
101	Phampuni	Koraput	Unknown
102	Kenduguda	Koraput	Unknown
103	Umbel	Koraput	Unknown
104	Konga	Koraput	Jain Temple
105	Paliva	Koraput	Jain Temple ruins
106	Chatua	Koraput	Chatua, Nandapur
107	Goriahandi	Koraput	Goriahandi, Kundra
108	Erenga	Koraput	Erenga, Jalaput
109	Kashipur	Koraput	Kashipur, Rayagada
110	Deorli	Koraput	Deorli, Kotpad
111	Deva Honjor	Koraput	Deva Honjor, Nandapur
112	Umerkote	Koraput	Bhadrasila Padara
113	Chikima Cave	Koraput	Chikima cave, Jeypore block
114	Narayanpal Bastar	Koraput	Unknown
115	Banamaliput	Koraput	Banamaliput, Nandapur
116	Gadh Bodra	Koraput	Gadh Bodra, Bastar
117	Injanpur	Koraput	Unknown
118	Padua	Koraput	Unknown
119	Bhairabsinghpur	Koraput	Unknown
120	Kotpad	Koraput	Unknown
121	Charmula	Koraput	Unknown
122	Jhodra Poraja Village	Koraput	Jaina Nisadhi

Sl.	City/ Village	District	Location of Jain historical remains
123	Biripada	Rayagada	Archaeological Mound

क़ुतुबमीनार : जैन मानस्तम्भ या सुमेरू पर्वत ?

प्रो डॉ.अनेकांत कुमार जैन
आचार्य - जैन दर्शन विभाग ,दर्शन संकाय
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विश्वविद्यालय
नई दिल्ली -११००१६
drakjain2016@gmail.com

हमें ईमानदारी पूर्वक भारत के सही इतिहास की खोज करनी है तो हमें जैन आचार्यों द्वारा रचित प्राचीन साहित्य और उनकी प्रशस्तियों का अध्ययन अवश्य करना चाहिए | यह बात अलग है कि उनके प्राचीन साहित्य को स्वयं भारतीय इतिहासकारों ने उतना अधिक उपयोग इसलिए भी नहीं किया क्यों कि जैन आचार्यों द्वारा रचित साहित्य के उद्धार को मात्र अत्यंत अल्पसंख्यक जैन समाज और ऊँगली पर गिनने योग्य संख्या के जैन विद्वानों की जिम्मेदारी समझा गया और इस विषय में राजकीय प्रयास बहुत कम हुए |इस बात से भी इन्कार नहीं किया जा सकता कि कुछ सांप्रदायिक भेद भाव का शिकार भी जैन साहित्य हुआ है और यही कारण है कि आज भी जैन आचार्यों के द्वारा संस्कृत,प्राकृत और अपभ्रंश आदि विविध भारतीय भाषाओँ में प्रणीत हजारों लाखों हस्तलिखित पांडुलिपियाँ शास्त्र भंडारों में अपने संपादन और अनुवाद आदि की प्रतीक्षा में रखी हुई हैं |

प्राचीन काल से आज तक जैन संत बिना किसी वाहन का प्रयोग करते हुए पदयात्रा से ही पूरे देश में अहिंसा और मैत्री का सन्देश प्रसारित करते आ रहे हैं | दर्शन ,कला ,ज्ञान-विज्ञान और साहित्य रचना में उनकी प्रगाढ़ रूचि रही है |अपने लेखन में उन्होंने हमेशा वर्तमान कालीन देश काल ,परिस्थिति, प्रकृति सौंदर्य ,तीर्थयात्रा ,राज व्यवस्था आदि का वर्णन किया है |उनके ग्रंथों की प्रशस्तियाँ ,गुर्वावलियाँ आदि भारतीय इतिहास को नयी दृष्टि प्रदान करते हैं | यदि इतिहासकार डॉ ज्योति प्रसाद जैन जी की कृति 'भारतीय इतिहास : एक दृष्टि' पढ़ेंगे तो उन्हें नया अनुसंध्येय तो प्राप्त होगा ही साथ ही एक नया अवसर इस बात का भी मिलेगा कि इस दृष्टि से भी इतिहास को देखा जा सकता है | जैन साहित्य में इतिहास की खोज करने वाले ९५ वर्षीय वयोवृद्ध विद्वान् प्रो.राजाराम जैन जी जिन्होंने अपना पूरा जीवन प्राकृत और अपभ्रंश की पांडुलिपियों के संपादन में लगा दिया ,यदि उनकी भूमिकाओं और निबंधों को पढ़ेंगे तो आँखें

खुल जाएँगी और लगेगा कि आधुनिक युग में भौतिक विकास के उजाले के मध्य भी भारत के वास्तविक इतिहास की अज्ञानता का कितना सघन अन्धकार है |

मुझे लगता है कि उन्होंने यदि १२-१३ वीं शती के जैन संतकवि बुधश्रीधर द्वारा अपभ्रंश भाषा में रचित जैनधर्म के तेइसवें तीर्थंकर पार्श्वनाथ के जीवन पर आधारित रचित ग्रन्थ **'पासणाह चरिउ'** की पाण्डुलिपि का संपादन और अनुवाद न किया होता तो दिल्ली और कुतुबमीनार के इतिहास की एक महत्वपूर्ण जानकारी कभी न मिल पाती |

आज मध्यकालीन भारतीय इतिहास में तोमर वंशी राजाओं की चर्चा बहुत कम होती है, जब कि दिल्ली एवं मालवा के सर्वांगीण विकास में उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा है । दिल्ली शाखा के तोमरवंशी राजा अनंगपाल (१२वीं सदी) का नाम अज्ञान के कुहासे में विलीन होता जा रहा था किन्तु हरियाणा के जैन महाकवि बुधश्रीधर अपने ''पासणाहचरिउ'' की विस्तृत प्रशस्तियों में उसका वर्णन कर उसे स्मृतियों में धूमिल होने से बचा लिया |दिल्ली के सुप्रसिद्ध इतिहासकार कुंदनलाल जैन जी लिखते हैं कि तोमर साम्राज्य लगभग ४५० वर्ष तक पल्लवित होता रहा उसका प्रथम संस्थापक अनंगपाल था |एक जैन कवि दिनकर सेनचित द्वारा अणंगचरिउ ग्रन्थ लिखा गया था जो आज उपलब्ध नहीं है किन्तु उसका उल्लेख महाकवि धवल हरिवंस रास में और धनपाल के बाहुबली चरिउ में किया गया है |[1]यदि यह ग्रन्थ किसी तरह मिल जाय तो इतिहास की कई गुत्थियाँ सुलझ सकती हैं |

बुध श्रीधर के साहित्य से ज्ञात होता है कि वे अपभ्रंश भाषा के साथ साथ प्राकृत ,संस्कृत भाषा साहित्य एवं व्याकरण के भी उद्भट विद्वान थे |पाणिनि से भी पूर्व शर्ववर्म कृत संस्कृत का कातन्त्र व्याकरण उन्हें इतना अधिक पसंद था कि जब वे ढिल्ली(वर्तमान दिल्ली) की सड़कों पर घूम रहे थे तो सड़कों के सौन्दर्य की उपमा तक कातन्त्र व्याकरण से कर दी –

'कातंत इव पंजी समिद्धु'

– अर्थात् जिस प्रकार कातंत्र व्याकरण अपनी पंजिका (टीका)से समृद्ध है उसी प्रकार वह ढिल्ली भी पदमार्गों से समृद्ध है |[2]

१२-१३ वीं सदी के हरियाणा के जैन महाकवि बुधश्रीधर अपूर्व कवित्व शक्ति के साथ घुमक्कड़ प्रकृति के भी थे किन्तु उसकी वह घुमक्कड़ प्रकृति रचनात्मक एवं इतिहास दृष्टि सम्पन्न भी थी । एक दिन वे जब अपनी एक अपभ्रंशभाषात्मक **चंदप्पहचरिउ** (चन्द्रप्रभचरित) को लिखते-लिखते कुछ थकावट का अनुभव करने लगे , तो उनकी घूमने की इच्छा हुई। अत: वह

---

[1] तोमर कालीन ढिल्ली के जैन सन्दर्भ – कुंदनलाल जैन ,कुतुबमीनार परिसर और जैन संस्कृति,पृष्ठ १५

[2] पासणाहचरिउ १/३/१० ,पृष्ठ ४

पैदल ही यमुनानगर होते हुये ढिल्ली (तेरहवीं सदी में यही नाम प्रसिद्ध था) अर्थात् दिल्ली आ गये ।यह पूरी कहानी उन्होंने अपनी प्रशस्ति में लिखी है |

उन्होंने लिखा है – 'ढिल्ली (दिल्ली) में सुन्दर-सुन्दर चिकनी-चुपड़ी चौड़ी-चौड़ी सड़कों पर चलते-चलते तथा विशाल ऊँची-ऊँची अट्टालिकाओं को देखकर प्रमुदित मन जब आगे बढ़ा जा रहा था तभी मार्ग में एक व्यक्ति ने उनके हाव-भाव को देखकर उन्हें परदेशी और (अजनबी) समझा अत: जिज्ञासावश उनसे पूछा कि आप कौन हैं और कहाँ जा रहे हैं ? तब उन्होंने कहा कि मैं हरियाणा-निवासी बुधश्रीधर नाम का कवि हूँ। एक ग्रन्थ लिखते-लिखते कुछ थक गया था, अत: मन को ऊर्जित करने हेतु यहाँ घूमने आया हूँ। यह प्रश्नकर्ता था अल्हण साहू[3], जो समकालीन दिल्ली के शासक अनंगपाल तोमर (तृतीय) की राज्यसभा का सम्मानित सदस्य था। उसने कवि को सलाह दी कि वह ढिल्ली के नगरसेठ नट्टलसाहू जैन जी से अवश्य भेंट करे। साहू नट्ठल की ''नगरसेठ'' की उपाधि सुनते ही कवि अपने मन में रुष्ट हो गया। उसने अल्हण साहू से स्पष्ट कहा कि धनवान् सेठ लोग कवियों को सम्मान नहीं देते। वे क्रुद्ध होकर नाक-भौंह सिकोड़ कर धक्का-मुक्की कर उसे घर से निकाल बाहर करते हैं। यथा-

.....अमरिस—धरणीधर—सिर विलग्ग णर सरूव तिक्खमुह कण्ण लग्ग।

असहिय—पर—णर—गुण—गुरूअ—रिद्धि दुव्वयण हणिय पर—कज्ज सिद्धि।

कय णासा—मोडण मत्थरिल्ल भू—भिउडि—भंडि णिंदिय गुणिल्ल।।[4]

ऐसा कहकर महाकवि ने नट्टलसाहू (जैन श्रेष्ठी)के यहाँ जाना अस्वीकार कर दिया। फिर भी अल्हणसाहू ने बार बार समझाया और उनकी प्रशंसा में कहा कि उन्होंने दिल्ली में प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव की प्रतिमा की प्रतिष्ठा भी करवाई है |[5]उनकी उदारता सुनकर बुधश्री बहुत प्रसन्न हुए और उनसे मिलने को तैयार हो गए | बुधश्री अल्हण के साथ नट्टलसाहू के घर पहुँचे और उसकी सज्जनता और उदारता से वह अत्यन्त प्रभावित हुए । भोजनादि कराकर नट्टल ने महाकवि से कहा-मैंने यहाँ एक विशाल नाभेय (आदिनाथ का) मन्दिर बनवाकर शिखर के ऊपर पंचरंगी झण्डा भी फहराया है।[6] उन्होंने चन्द्रमा के धाम के समान आठवें तीर्थंकर चन्द्रप्रभ स्वामी जी की मूर्ती की भी स्थापना करवाई थी |[7] यह कहने के बाद नट्टल साहू ने महाकवि से निवेदन किया

---

[3] दिट्ठउ अल्हणु णामेणु | पा.च.१/४/६ ,पृष्ठ ६

[4] पासणाहचरिउ १/७

[5] तित्थयरू पइट्ठावियउ जेण पढमउ | पा.च.१/६/३,पृष्ठ ८

[6] काराविव णाहेयहो णिकेहु पविइण्णु पंचवण्णं सुकेउ | पा.च.१/९/१,पृष्ठ ११

[7] पइं होई चडाविउ चंदधामु | पा.च.१/९/४,पृष्ठ ११

कि मेरे दैनिक स्वाध्याय के लिये पासणाहचरिउ (पार्श्वनाथ—चरित) की रचना करने की कृपा करें । कवि ने उक्त नाभेय-मन्दिर में बैठकर उक्त ग्रन्थ की रचना कर दी जिसके लिये नट्टलसाहू ने कवि का आभार मानकर उसे सम्मानित किया।

बुधश्रीधर ने ढिल्ली के इस स्थान का वर्णन करते समय एक गगन मंडल को छूते हुए साल का वर्णन किया है जिसकी तुलना अपनी विस्तृत प्रस्तावना में प्रो राजाराम जैन जी ने कुतुबमीनार से की है | वे लिखते हैं कि गगनचुम्बी सालु का अर्थ कीर्ति स्तम्भ है जिसका निर्माण राजा अनंगपाल ने अपने किसी दुर्धर शत्रु पर अपनी विजय के उपलक्ष्य में बनवाया था | कवि ने भी उसका उल्लेख नभेय मंदिर के निर्माण के प्रसंग में किया है चूँकि नट्टलसाहू ने उक्त मंदिर शास्त्रोत विधि से निर्मित करवाया था और जैन मंदिर वास्तुकला में मानस्तम्भ मंदिर के द्वार पर अनिवार्य रूप से बनाया जाता है अतः यह '**गगणमंडलालग्गु सालु**' ही वह मानस्तंभ रहा होगा जो वर्तमान में कुतुबमीनार में तब्दील कर दिया गया |[8]

बुध श्रीधर द्वारा वर्णित उक्त दोनों वास्तुकला के अमर-चिन्ह कुछ समय बाद ही नष्ट-भ्रष्ट हो गए और परवर्ती कालों में मानव स्मृति से भी ओझल होते गए। इतिहास मर्मज्ञ पं. हरिहरनिवास द्विवेदी जी ने बुधश्रीधर के उक्त सन्दर्भो का भारतीय इतिहास के अन्य सन्दर्भों के आलोक में गम्भीर विश्लेषण कर यह सिद्ध कर दिया है कि दिल्ली स्थित वर्तमान गगनचुम्बी कुतुबमीनार ही अनंगपाल तोमर द्वारा निर्मित कीर्तिस्तम्भ है तथा कुतुबुद्दीन ऐबक (वि. स. १२५०) जब ढिल्ली का शासक बना तब उसने विशाल नाभेय जैन मन्दिर तथा अन्य मंदिरों को ध्वस्त करा कर उनकी सामग्री से कुतुबमीनार का निर्माण करा दिया तथा नाभेय जैन मंदिर के प्रांगण मे कुछ परिवर्तन कराकर उसे कुतुब्बुल—इस्लाम—मस्जिद का निर्माण करा दिया।[9] विद्वान भी मानते हैं कि यह मीनार कुतुबुद्दीन ऐबक से कम से कम ५०० वर्ष पहले तो अवश्य विद्यमान थी।

कुतुब परिसर के मुख्य द्वार पर अरबी में लिखा हुआ वह अभिलेख जिसमें सूर्यस्तम्भ के चारों और २७ मंदिरों को तोड़ने का उल्लेख है

[8] पा.च.प्रस्तावना पृष्ठ ३५ ,प्रो राजाराम जैन

[9] पासणाहचरिउ की भूमिका, पृ. ३५

कुतुबमीनार : सूर्यस्तम्भ ,मानस्तंभ या सुमेरु पर्वत ?

कुतुबमीनार मीनार के साथ बनी कुव्वत-उल-इस्लाम नामक मस्जिद के मुख्य द्वार पर अरबी भाषा में लिखा एक अभिलेख (शिलालेख) लगा हुआ है। उसमें कुतुबुद्दीन ऐबक ने लिखवाया है -

ई हिसार फतह कर्दं ईं मस्जिद राबसाखत बतारीख फीसहोर सनतन समा व समानीन वखमसमत्य अमीर उल शफहालार अजल कबीर कुतुब उल दौल्ला व उलदीन अमीर उल उमरा एबक सुलतानी अज्ज उल्ला अनसारा व बिस्ती हफत अल बुतखाना मरकनी दर हर बुतखाना दो बार हजार बार हजार दिल्लीवाल सर्फ सुदा बूददरी मस्जिद बकार बस्ता सदा अस्त॥

अर्थात् हिजरी सन् ५८७ (११९१-९२ ईसवी सन्) में कुतुबुद्दीन ऐबक ने यह किला विजय किया और सूर्यस्तम्भ के घेरे में बने २७ बुतखानों (मन्दिरों) को तोड़कर उनके मसाले से यह मस्जिद बनवाई। ये मन्दिर एक-से मूल्य के थे। एक-एक मन्दिर २०-२० लाख दिल्लीवाल (दिल्ली में बने सिक्के का नाम) की लागत से बना हुआ था।

पुरातत्त्व संग्रहालय के निदेशक विरजानन्द दैवकरणि ने मीनार के माप को लेकर लिखा है कि २३८ फीट १ इंच ऊंची मीनार का मुख्य प्रवेशद्वार उत्तर दिशा (ध्रुवतारे) की ओर है।इस मीनार के प्रथम खण्ड में दस (सात बड़ी, ३ छोटी), द्वितीय खण्ड में पांच तथा तीसरे, चौथे, पांचवें खण्ड में चार-चार खिड़की हैं। ये कुल मिलाकर २७ हैं। ज्योतिष के अनुसार २७ नक्षत्र होते हैं। ज्योतिषक और वास्तु की दृष्टि से दक्षिण की ओर झुकाव देकर कुतुबमीनार का निर्माण किया गया है। इसीलिये सबसे बड़े दिन २१ जून को मध्याह्न में इतने विशाल स्तम्भ की छाया भूमि पर नहीं पड़ती। कोई भी वहां जाकर इसका निरीक्षण कर सकता है। इसी प्रकार दिन-रात बराबर होने वाले दिन २१ मार्च, २२ सितम्बर को भी मध्याह्न के समय इस विशाल स्तम्भ के मध्यवर्ती खण्डों की परछाई न पड़कर केवल बाहर निकले भाग की छाया पड़ती है और वह ऐसे दीखती है जैसे पांच घड़े एक दूसरे पर औंधे रक्खे हुये हों।

वे लिखते हैं कि वर्ष के सबसे छोटे दिन २३ दिसम्बर को मध्याह्न में इसकी छाया २८० फीट दूर तक जाती है, जबकि छाया ३०० फीट तक होनी चाहिये। क्योंकि मूलतः मीनार ३०० फीट की थी (१६ गज भूमि के भीतर और ८४ गज भूमि के बाहर = १०० गज = ३०० फीट)। यह २० फीट की छाया की कमी इसलिये है कि मीनार की सबसे ऊपर के मन्दिर का गुम्बद

जैसा भाग टूट कर गिर गया था। जितना भाग गिर गया, उतनी ही छाया कम पड़ती है, मीनार का ऊपरी भाग न टूटता तो छाया भी ३०० फीट ही होती।[10]

संभवतः इसके ऊपर २० फीट की शिखर युक्त बेदी थी जिसमें तीर्थंकर प्रतिमा स्थापित थी जो या तो बिजली आदि गिरने से खंडित हो गयी या फिर बुत परस्ती की खिलाफत करने वाले मुग़ल सम्राटों ने उसे तुडवा दिया | मीनार चूँकि वास्तुकला का एक अद्भुत नमूना था अतः उस पर पत्थर लगवा कर अरबी में अपने शिलालेख खुदवाकर उसे यथावत् रहने दिया | प्रसिद्ध दार्शनिक और इतिहास के विद्वान् श्री आचार्य उदवीर शास्त्री, श्री महेशस्वरूप भटनागर, श्री केदारनाथ प्रभाकर आदि अनेक शोधकर्त्ताओं ने सन् १९७०-७१ में कुतुबमीनार और इसके निकटवर्ती क्षेत्र का गूढ़ निरीक्षण किया था। उस समय इस मीनार की आधारशिला तक खुदाई भी कराई थी, जिससे ज्ञात हुआ कि यह मीनार तीन विशाल चबूतरों पर स्थित है। पूर्व से पश्चिम में बने चबूतरों की लम्बाई ५२ फीट तथा उत्तर से दक्षिण में बने चबूतरे की लम्बाई ५४ फीट है। यह दो फीट का अन्तर इसलिये है कि मीनार का झुकाव दक्षिण दिशा की ओर है, इसका सन्तुलन ठीक रक्खा जा सके। उसी निरीक्षण काल में श्री केदारनाथ प्रभाकर जी को मस्जिद के पश्चिमी भाग की दीवार पर बाहर की ओर एक प्रस्तर खण्ड पर एक त्रुटित अभिलेख देखने को मिला। उसके कुछ पद इस प्रकार पढ़े गये थे -**सूर्यमेरुः पृथिवी यन्त्रै मिहिरावली यन्त्रेण** |[11] यहाँ इसे सूर्य मेरु नाम से अभिहीत किया गया है | कुछ विद्वान इसे खगोल विद्या से

४-मानस्तम्भ भूमि :- (ति.प.।४।७६१-७८८)

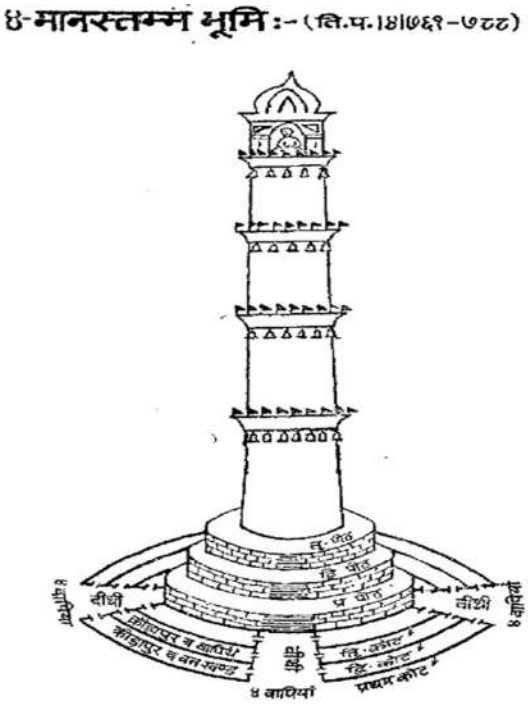

[10] कुतुबमीनार : एक रहस्योद्घाटन,लेखक - विरजानन्द दैवकरणि, निदेशक, पुरातत्त्व संग्रहालय, झज्जर https://www.jatland.com/home/Qutb_Minar

[11] वही

सम्बंधित ज्योतिष केंद्र के रूप में देखते हैं जिसका सम्बन्ध वराहमिहिर से जोड़ते हैं | प्रो राजाराम जैन जी का दावा है कि यह मानस्तम्भ है जो तीर्थंकरों के समवशरण के सामने होता है तथा जैन मंदिर वास्तुकला में मन्दिर के प्रवेश द्वार के करीब निर्मित करवाया जाता है तथा जिस पर तीर्थंकर की प्रतिमा चारों दिशाओं में स्थापित होती है |[12]

⇦ ASI ने अभी कुतुबमीनार के दक्षिण भाग में पार्क में यह छतरी बना कर स्थापित की है |ऐसा बताया जाता है कि यह मीनार का वह उपरी हिस्सा है जो टूट कर गिर गया था |

हरिवंशपुराण में सुमेरु पर्वत के २५ नाम गिनाये हैं जिसमें सूर्याचरण, सूर्यावर्त, स्वयंप्रभ, और सूरगिरि-ये नाम भी हैं -

सूर्याचरणविख्याति: सूर्यावर्त: स्वयंप्रभ:।
इत्थं सुरगिरिश्चेति लब्धवर्णै: स वर्णित:।।[13]

जैन आगमों में सुमेरु पर्वत का वर्णन किया गया है | उसके अनुसार जम्बूद्वीप १ लाख योजन विस्तृत थाली के समान गोलाकार है। यह बड़ा योजन है, जिसमें २००० कोस यानि ४००० मील माने गए हैं, अत: यह जम्बूद्वीप ४० करोड़ मील विस्तार वाला है। इसमें बीचों बीच में सुमेरुपर्वत है। पृथ्वी में इसकी जड़ १००० योजन मानी गई है और ऊपर ४० योजन की चूलिका है। सुमेरु पर्वत १० हजार योजन विस्तृत और १ लाख ४० योजन ऊँचा है। सबसे नीचे भद्रशाल वन है, इसमें बहुत सुन्दर उद्यान-बगीचा है। नाना प्रकार के सुन्दर वृक्ष फूल लगे हैं। यह सब वृक्ष, फल-फूल वनस्पतिकायिक नहीं हैं प्रत्युत् रत्नों से बने पृथ्वीकायिक है। इस भद्रसाल वन में चारों दिशा में एक-एक विशाल जिनमंदिर है। इनका नाम है त्रिभुवन तिलक जिनमंदिर। उनमें १०८-१०८ जिनप्रतिमाएँ विराजमान हैं।[14] (यह संक्षिप्त वर्णन है)

---

[12] पा.च.प्रस्तावना ,प्रो.राजाराम जैन ,पृष्ठ ४२

[13] हरिवंशपुराण ३७६ ,आचार्य जिनसेन

[14] जम्बुद्वीप-आर्यिका ज्ञानमती,encyclopediaofjainism.com

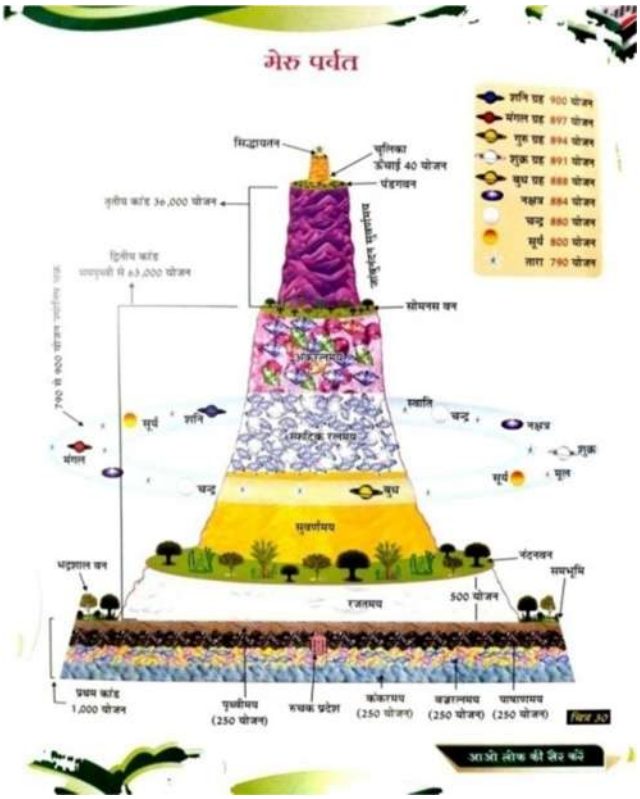

जम्बुद्वीप ,हस्तिनापुर में २१वीं शती में जैन शास्त्र विधि से निर्मित सुमेरु पर्वत की रचना

जैन शास्त्रों के अनुसार सुमेरु पर्वत का नक्शा

अब इस वर्णन को पढने के बाद आप वुधश्रीधर का पासणाह चरिउ की प्रशस्ति में उनके हरियाणा से दिल्ली प्रवेश पर देखे गए ऊँचे स्तंभ का वर्णन हूबहू पढ़िए और स्वयं तुलना कीजिये |वे लिखते हैं – 'जिस ढिल्ली-पट्टन में गगन मंडल से लगा हुआ साल है ,जो विशाल अरण्यमंडप से परिमंडित है, जिसके उन्नत गोपुरों के श्री युक्त कलश पतंग (सूर्य) को रोकते हैं ,जो जल से परिपूर्ण परिखा (खाई) से आलिंगित शरीर वाला है ,जहाँ उत्तम मणिगणों(रत्नों) से मंडित विशाल भवन हैं ,जो नेत्रों को आनंद देने वाले हैं ,जहाँ नागरिकों और खेचारों को सुहावने लगने वाले सघन उपवन चारों दिशाओं में सुशोभित हैं ,जहाँ मदोन्मत्त करटि-घटा (गज-समूह)अथवा समय सूचक घंटा या नगाड़ा निरंतर घडहडाते(गर्जना करते)रहते हैं और अपनी प्रतिध्वनि से दिशाओं विदिशाओं को भी भरते रहते हैं |[15]

जहिँ गयणमंडलालग्गु सालु रण- मंडव- परिमंडिउ विसालु ।।

गोउर- सिरिकलसाहय-पयंगु जलपूरिय- परिहालिंगियंगु।।

[15] पा.च.१/३/१-३ , पृष्ठ ४

जहिँ जणमण णयणाणंदिराइँ मणियरगण मंडिय मंदिराइँ
जहिँ चउदिसु सोहहिँ घणवणाइँ णायर-णर-खयर-सुहावणाइँ।।
जहिं समय-करडि घडघड हणंति पडिसद्दैं दिसि-विदिसिवि फुंडति ।।

इस बात की भी प्रबल सम्भावना है कि यह जो वर्तमान का कुतुबमीनार है वह सुमेरु पर्वत की रचना है जो शास्त्रोक्त विधि से निर्मित की गयी थी |

पांडुक शिला -

कुतुबमीनार परिसर में प्रवेश करने से पूर्व ही पूरब दिशा की तरफ एक और स्मारक बना है जो गोल आकृति का है तथा ऊपर की ओर तीन स्तर पर उसकी आकृति छोटी होती जाती है |मैंने उसे स्वयं देखा और उसके बारे में जानने की कोशिश की तो वहां के गाइड ने कहा कि यह अंग्रेजों ने ऐसे ही बनवा दिया था |उसकी आकृति देखकर मुझे बुध श्रीधर जी का वह प्रसंग याद आ गया जब नट्टल साहू जी ने यहाँ चन्द्रप्रभ तीर्थंकर की प्रतिष्ठा करवाई थी | जैन परंपरा में पंचकल्याणक प्रतिष्ठा आज भी शास्त्रोक्त विधि से वैसे ही होती हैं जैसे प्राचीन काल में होती थीं | उसमें तीर्थंकर के जन्मकल्याणक के बाद उनके जन्माभिषेक की क्रिया बहुत महत्त्वपूर्ण मानी जाती है जिसमें सौधर्म इंद्र तीर्थंकर बालक को पांडुक शिला पर विराजमान करके उनका अभिषेक करवाने का अनिवार्य अनुष्ठान होता है | इसके लिए आज भी पांडुक शिला का निर्वाण वैसा ही करवाया जाता है जैसा शास्त्र में उल्लिखित है | बहुत कुछ सम्भावना है कि यह वही पांडुक शिला है जहाँ नट्टल साहू जी ने चन्द्रप्रभ तीर्थंकर की प्रतिमा की प्रतिष्ठा करवाई थी और जन्माभिषेक करवाया था | तुलना हेतु मैं दोनों के चित्र प्रस्तुत कर रहा हूँ –

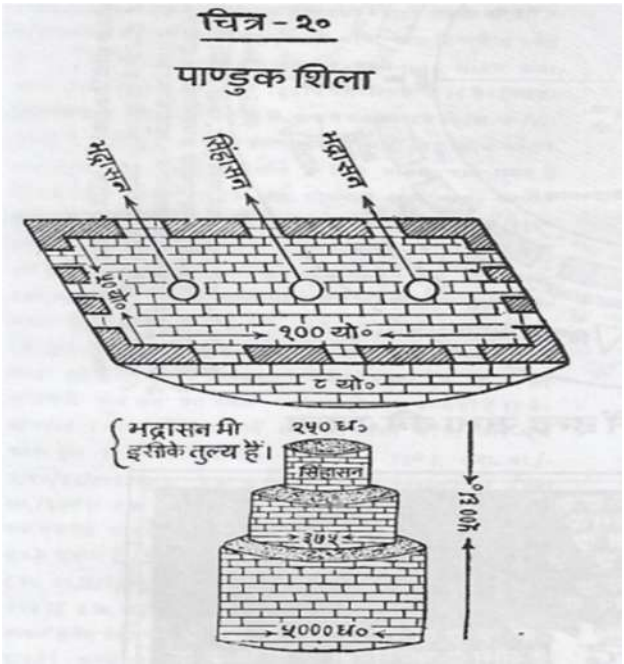

क़ुतुबपरिसर की कुछ जैन मूर्तियाँ -

बुध श्रीधर इस मंदिर परिसर का वर्णन करते हुए लिखते हैं- **'जाहिं समय करडि घड घड हणंति'**[16] जिसका एक अनुवाद यह किया गया है कि जहाँ समय सूचक घंटा गर्जना किया करते हैं | अब आप स्वयं यदि क़ुतुब परिसर में भ्रमण करें तो वहां शायद ही कोई स्मारक ऐसा मिले जिसपर छोटी या बड़ी घंटियाँ उत्कीर्ण न हों | सैकड़ों खम्बे ,तोरण और स्वयं मीनार की दीवारों पर चारों और घंटियाँ निर्मित हैं | हो न हो इस स्थान पर कोई बड़ा धातु का घंटा भी रहा होगा जो प्रत्येक समयचक्र को अपनी ध्वनि द्वारा सूचित करता होगा | इन्हीं खम्भों पर और छतों पर अनेक तीर्थकर और देवियों की प्रतिमाएं भी साफ़ उत्कीर्ण दिखलाई देती हैं |मंदिर के परकोटे के बाहर की तरफ जमीं की तरफ पद्मावती देवी की उल्टी प्रतिमा भी दिखलाई देती है जिनकी पहचान उनके मस्तिष्क पर नागफण का चिन्ह होने से होती है |

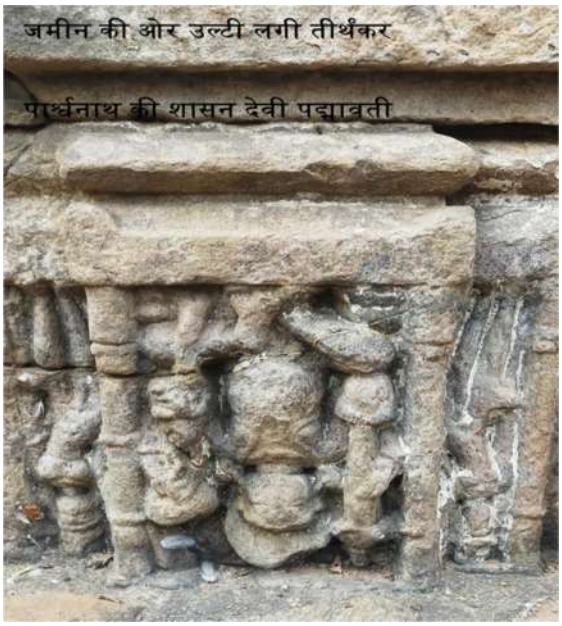

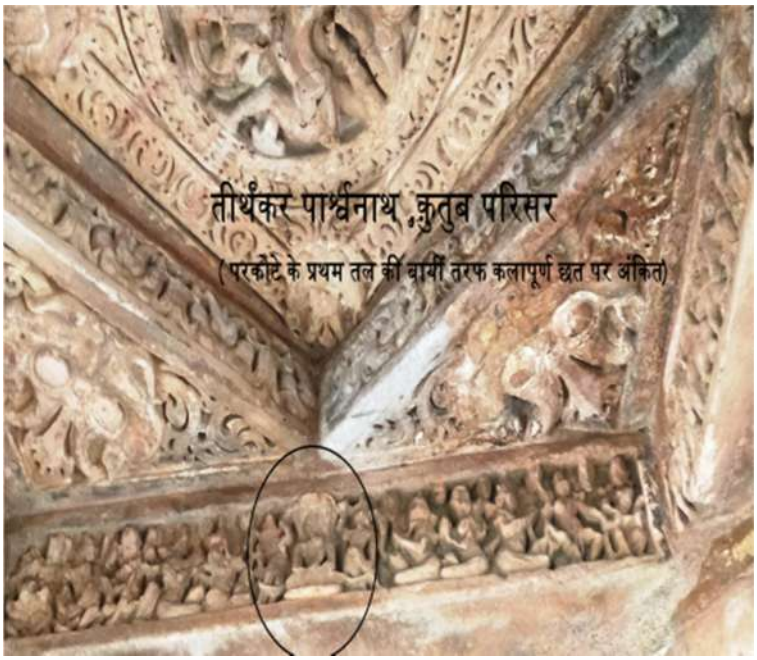

कई खम्भों पर जैन शासन देवी अम्बिका आदि भी उत्कीर्ण हैं |प्रमाण स्वरुप कुछ चित्र दर्शनीय हैं-

[16] पा.च.१/३/५,पृष्ठ ४

जैन शासन देवी अम्बिका

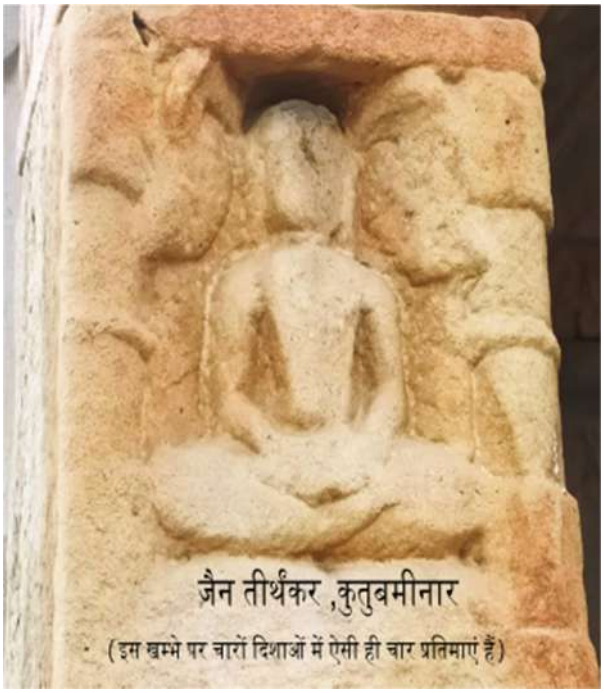

जैन तीर्थंकर ,कुतुबमीनार

(इस खम्भे पर चारों दिशाओं में ऐसी ही चार प्रतिमाएं हैं)

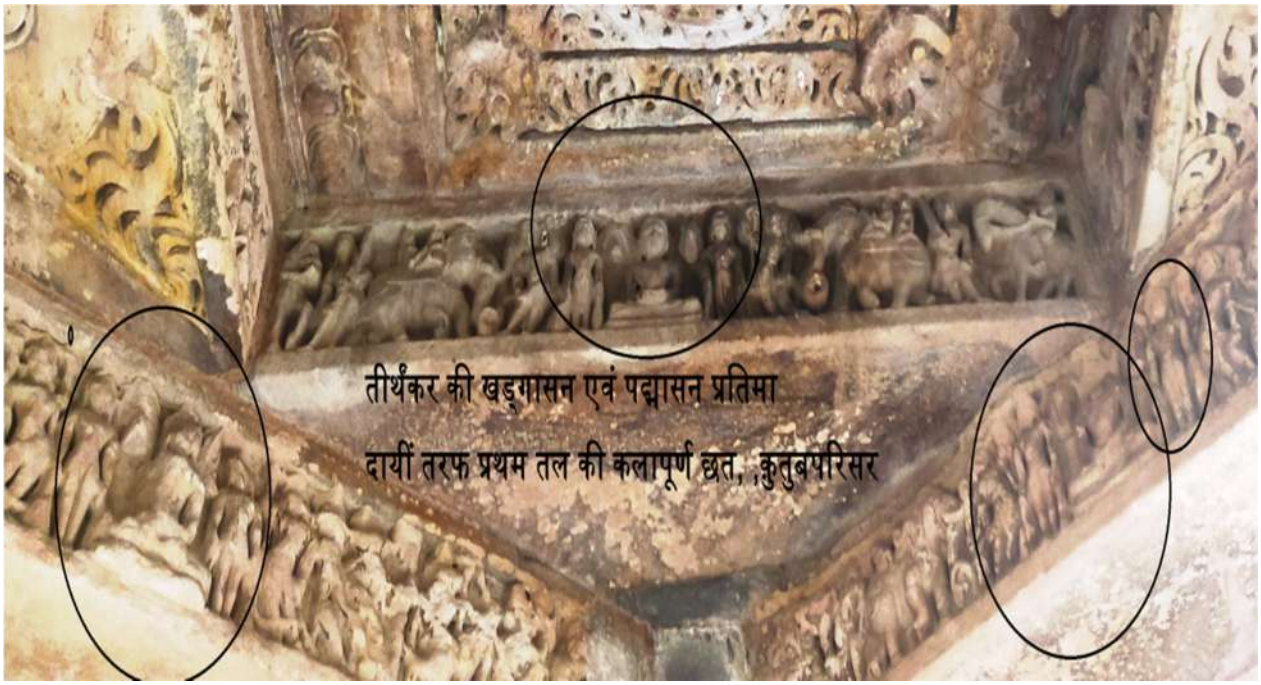

तीर्थंकर की खड्गासन एवं पद्मासन प्रतिमा

दायीं तरफ प्रथम तल की कलापूर्ण छत, ,कुतुबपरिसर

अनंगपाल तोमर की प्रशंसा और सरोवर का उल्लेख –

वुध श्रीधर अपनी प्रशस्ति में अनंग नाम के विशाल सरोवर का उल्लेख करते हैं – **'पविउलु अणंगसरु जहिं विहाइ'**[17] जो संभवतः दिल्ली के संस्थापक सम्राट अनंगपाल तोमर द्वितीय के नाम से स्थापित है |कवि सम्राट अनंगपाल तोमर की प्रशंसा करते हैं और उन्हें नारायण श्री कृष्ण के समान बताते हुए कहते हैं कि जो राजा त्रिभुवन पति प्रजाजनों के नेत्रों के लिए तारे के समान ,कामदेव के समान सुन्दर ,सभा कार्यों में निरंतर संलग्न एवं कामी जनों के लिए प्रवर मान का कारण है ,जो संग्राम का सेना नायक है तथा किसी भी शत्रु राज्य के वश में न होने वाला और जो कंस वध करने वाले नारायण के समान (अतुल बलशाली) है |[18]

कवि सम्राट अनंगपाल तोमर को नरनाथ की संज्ञा देता है – **णरणाहु पसिद्धु अणंगवालु,**और कहता है कि ढिल्ली पट्टन में सुप्रसिद्ध नरनाथ अनंगपाल ने अपने श्रेष्ठ असिवर से शत्रुजनों के कपाल तोड़ डाले ,जिसने हम्मीर-वीर के समस्त सैन्य समूह को बुरी तरह रौंद डाला और बंदी जनों में चीर वस्त्र का वितरण किया ,जो अनंगपाल दुर्जनों की ह्रदय रुपी पृथ्वी के लिए सीरू हलके फाल के समान तथा जो दुर्नय करने वाले राजाओं का निरसन करने के लिए समीर-वायु के समान है ,जिसने अपनी प्रचंड सेना से नागर वंशी अथवा नागवंशी राजा को भी कम्पित कर दिया था, वह मानियों के मन में राग उत्पन्न कर देने वाला है |[19] इस प्रकार बुध श्रीधर अपनी प्रशस्ति में इतिहास के अछूते पहलु भी उजागर करते हैं और हम सभी को पुनर्विचार पर विवश करते हैं |

विमर्श योग्य बिंदु

वर्तमान में कुतुबमीनार के परिसर में भ्रमण करने पर भी यह स्थिति साफ़ है कि महरौली तथा उसके आसपास स्थित अनेक जैन मंदिरों को तोड़कर उसकी सामग्री से इसका निर्माण करवाया गया था | कुतुबमीनार संज्ञा से यह मान लिया गया कि इसका निर्माण कुतबुद्दीन ऐबक ने करवाया किन्तु यदि ऐसा होता तो उस पर वह इस बात का उल्लेख जरूर करवाता किन्तु ऐसा नहीं है | क़ुतुब शब्द अरबी है और उसका अर्थ ध्रुव तारा भी होता है और किताब भी होता है बहुत कुछ सम्भावना इस बात की है कि नाभेय जैन मंदिर परिसर में निर्मित गगन चुम्बी स्तम्भ जिसका वर्णन बुधश्रीधर करते हैं वह जैन मानस्तम्भ या सुमेरु पर्वत की

---

[17] पा.च.१/३/७,पृष्ठ ४

[18] पा.च.१/३/घत्ता/पृष्ठ ५

[19] पा.च.१/४/१-४ ,पृष्ठ ६

प्रतिकृति था जिसके सबसे ऊपर तीर्थंकरों की प्रतिमाएं विराजमान थीं | अरबी में लिखे शिलालेख में जो लिखा है **'सूर्य स्तम्भ के घेरे में बने मंदिरों को तोड़कर'**उससे साफ़ है कि वे सुमेरु पर्वत के नीचे भद्रसाल वन में चारों दिशा में बने एक-एक विशाल जिनमंदिर है। जिनका नाम त्रिभुवन तिलक जिनमंदिर है ।यह भी एक संयोग है की बुधश्रीधर सम्राट अनंगपाल तोमर को राजा त्रिभुवनपति – **'तिहुअणवइ'[20] नाम से संबोधित करते हैं |**

उन दिनों दर्शनार्थी सुमेरु में ऊपर तक उन प्रतिमाओं के दर्शन करने जाते थे तथा खगोलशास्त्र में रूचि रखने वाले विद्वान् यहाँ से उत्तरी ध्रुव तारे को बड़ी ही सुगमता से देखते थे | इसलिए जिस मीनार से क़ुतुब (ध्रुवतारा) देखा जाय वह क़ुतुब मीनार- ऐसा नाम प्रसिद्ध हो गया | बुत परस्ती की खिलाफत करने वाले मुग़ल सम्राटों ने इसके ऊपर विराजमान तीर्थंकर भगवान् की प्रतिमाओं को तोड़ दिया और उन मूर्ती के अवशेषों को मीनार की दीवारों में ही चुनवा दिया | क़ुतुब (ध्रुवतारा)और कुतबुद्दीन ऐबक संज्ञा समान होने से इसके नाम परिवर्तन की आवश्यकता नहीं समझी गयी और उसे इसका निर्माता मानने का भ्रम खड़ा होने में भी आसानी हुई |

१९८१ तक इस मीनार की ऊंचाई तक आम जनता भी जाती रही ,किन्तु १९८१ में ही घटी एक दुर्घटना में भगदड़ अनेक लोग मीनार के अन्दर मर गए और मीनार के कई पत्थर उखड़ गए |उसके बाद इसे बंद कर दिया गया | वे जो ऊपर के पत्थर टूटे थे उनके अन्दर अनेक जैन तीर्थंकरों की प्रतिमाएं निकली थीं और उसका उल्लेख उन दिनों के प्रकाशित अख़बारों में किया गया था | आज वे प्रतिमाएं निश्चित रूप से पुरातत्त्व विभाग के पास सुरक्षित होनी चाहिए | अभी भी मीनार के पास कई खम्भों में तीर्थंकर की प्रतिमाएं स्पष्ट दिखाई देतीं हैं जिनका मेरे पास स्वयं लिया हुआ चित्र है |

एक और सम्भावना मैं व्यक्त करना चाहता हूँ | जैन साहित्य में जम्बूद्वीप का वर्णन प्राप्त होता है जिसके मध्य में सुमेरु पर्वत है ,इसकी प्रतिकृति जैन साध्वी गणिनी आर्यिका ज्ञानमतीमाता जी की प्रेरणा से हस्तिनापुर में जम्बुद्वीप में निर्मित की गयी है | यदि आप उस शास्त्रोक्त विधि से निर्मित उक्त सुमेरु पर्वत को देखेंगे उसका अध्ययन करेंगे और कुतुबमीनार को देखेंगे तो उसकी बनावट देखकर सहज ही कह उठेंगे कि यह छोटा कुतुबमीनार है |इसे मैंने तुलनात्मक रूप से एक चित्र के माध्यम से प्रदर्शित किया है |यह सारे विषय बहुत बड़ी अनुसंधान परियोजना की अपेक्षा करते हैं |

[20] पा.च.१/३/१५,पृष्ठ ५

कुतुब परिसर का जो प्राचीन प्रवेश द्वार है वह और उसका पूरा अधिष्ठान नाभेय मंदिर का प्रवेश द्वार जैसा ही लगता है |पहली शताब्दी के प्राकृत भाषा में आचार्य यति वृषभ द्वारा रचे जैन ग्रन्थ तिलोयपण्णत्ति में चौथे अधिकार में तीर्थंकर के समवशरण के सबसे पहले धूलिसालों का वर्णन किया है जिसके चित्र की तुलना आप कुतुब परिसर के प्रवेशद्वार से कर सकते हैं -

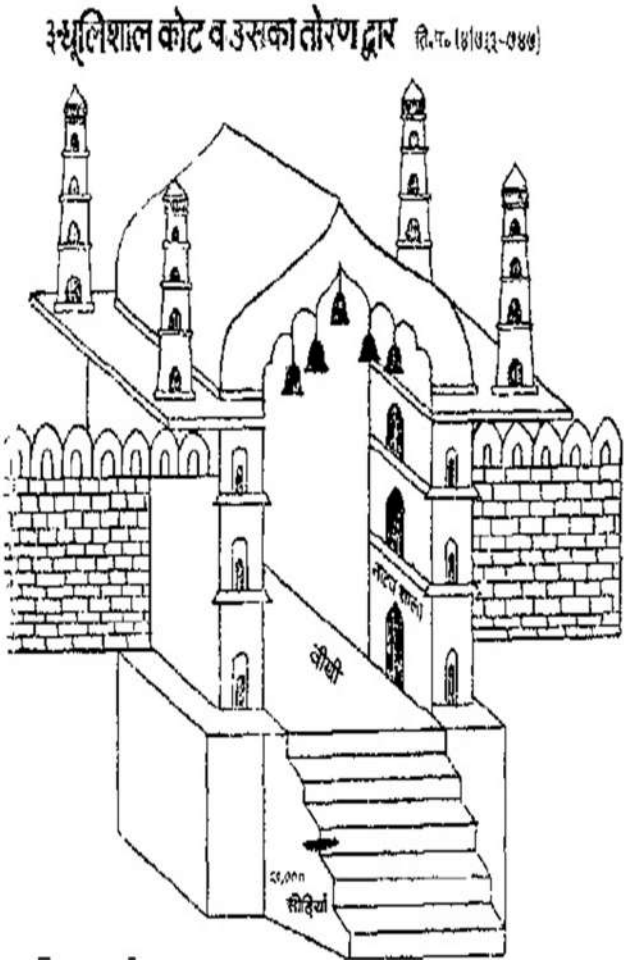

आज महरौली में ही एक प्राचीन जैन दादा बाड़ी भी है जिसमें बहुत सुन्दर श्वेताम्बर जैन मंदिर है |इसका जीर्णोद्धार एवं नवीन निर्वाण किया गया है | यह महरौली के उन्हीं जैन मंदिरों की श्रृंखला का एक भाग है जिन्हें ध्वंस करके कुतुबमीनार एवं उसके परिसर का निर्माण हुआ था |कुतुबमीनार के ही समीप लाडोसराय के चौराहे पर तथा गुरुग्राम के रोड पर एक विशाल जैन मंदिर अहिंसा स्थल नाम से इसी बीसवीं शताब्दी में श्रेष्ठी स्व.प्रेमचंद जैन जी(जैना वाच) के द्वारा निर्मित हुआ है जिसमें एक लघु पहाड़ी पर चौबीसवें तीर्थंकर भगवान् महावीर की सुन्दर मनोज्ञ वीतराग भाव युक्त लाल ग्रेनाईट पत्थर विशाल प्रतिमा खुले आकाश में स्थापित है जिसके दर्शन बहुत दूर से ही होने लगते हैं |

अहिंसा स्थल भगवान् महावीर ,
स्थापित १९८९

मेरा तो बस इतना सा निवेदन यह है कि इस विषय में आग्रह मुक्त होकर अनुसन्धान किया जाय | यह हमारे भारत के गौरव शाली अतीत के ऐसे साक्ष्य हैं जिन्हें दबाने के भरकस यत्न किये गए किन्तु अब उन्हें सामने लाने का सार्थक प्रयास करना चाहिए |

सहायक ग्रन्थ एवं लेख -

१. भारतीय इतिहास के पूरक प्राकृत साक्ष्य – प्रो.राजाराम जैन, प्राकृत विद्या जुलाई-सितम्बर १९९५ अंक २
२. श्रमण संस्कृति की अनमोल विरासत : जैन पांडुलिपियाँ –प्रो राजाराम जैन , encyclopediaofjainism.com
३. पासणाह चरिउ – महाकवि बुध श्रीधर ,संपादन एवं प्रस्तावना – डॉ.राजाराम जैन ,प्रकाशक ,भारतीय ज्ञानपीठ ,नई दिल्ली ,प्रथम संस्करण -२००६
४. कुतुबमीनार : एक रहस्योद्घाटन,लेखक - विरजानन्द दैवकरणि, निदेशक, पुरातत्त्व संग्रहालय, झज्जर https://www.jatland.com/home/Qutb_Minar
५. जम्बुद्वीप-आर्यिका ज्ञानमती,encyclopediaofjainism.com
६. कुतुबमीनार परिसर और जैन संस्कृति – संपादक डॉ नीलम जैन ,निर्देशक श्री ह्रदयराज जैन (उपाध्याय ज्ञानसागर जी के सान्निध्य में ऋषभदेव फाउंडेशन द्वारा आयोजित संगोष्ठी में पठित शोध पत्रों का संग्रह)प्रका.प्राच्य श्रमण भारती ,मुजफ्फरनगर

परिशिष्ट- अन्य चित्र

जैन मंदिर निर्माण का शास्त्रोक्त नक्शा

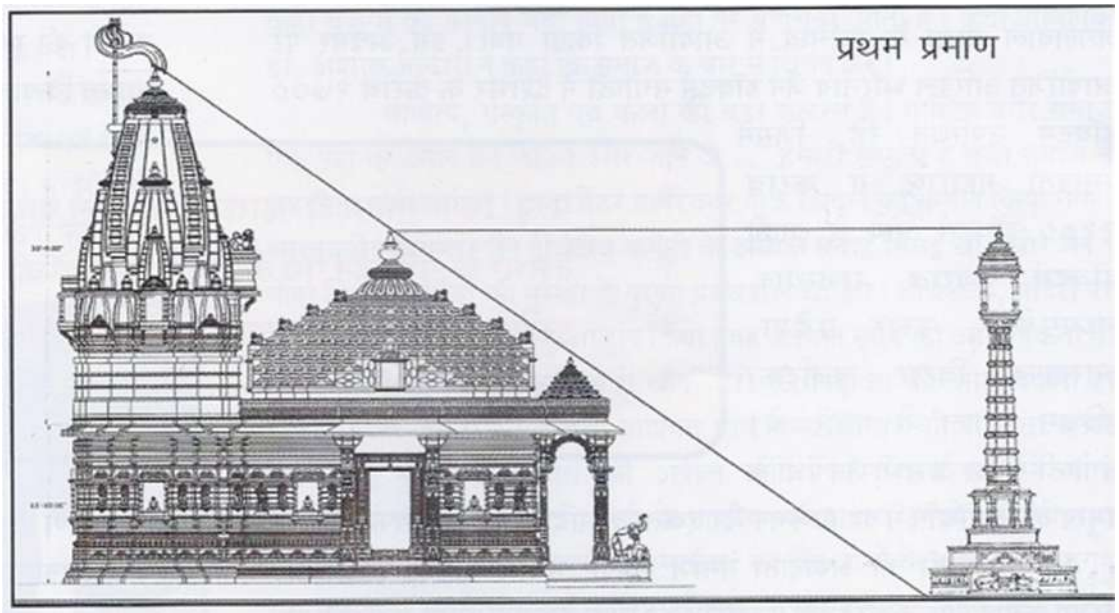

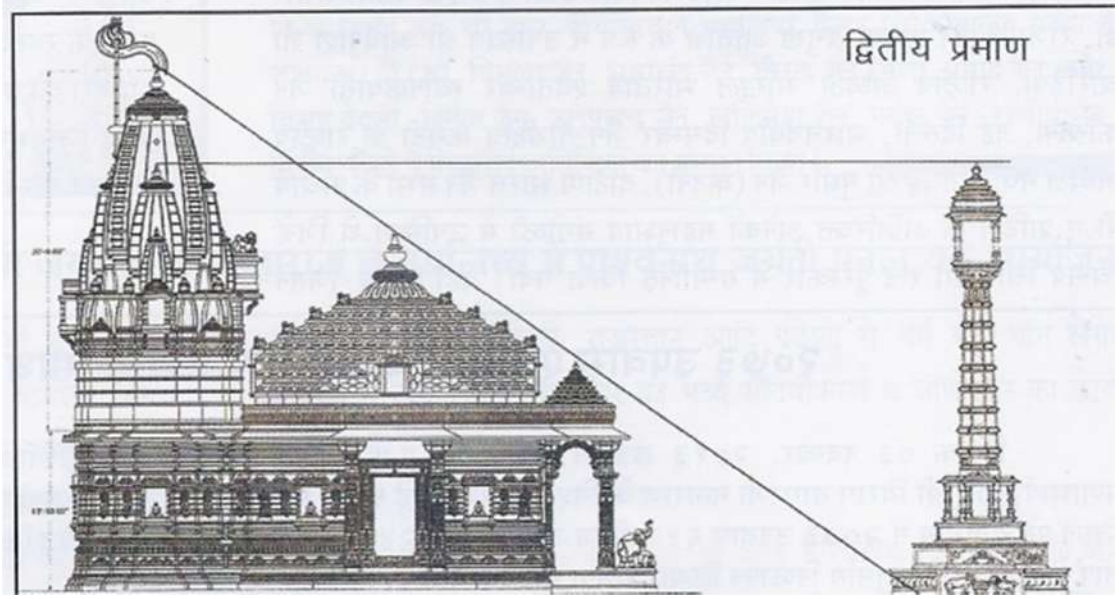

कुतुबमीनारकी दीवारके नीचे खोदाईमें देव मूर्तियां मिली

नयी दिल्ली, २४ अगस्त (भा.)। विश्व विख्यात कुतुबमीनारकी बाहरी दीवारके नीचे खोदाईके दौरान देवताओंकी दो प्राचीन मूर्तियां पायी गयी है। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभागके एक वरिष्ठ अधिकारीने आज यहां कहा कि मूर्तियां कुतुबमीनारकी १२ वीं शदीमें बनी बाहरकी दीवारके नीचे दबी पायी गयी। उन्होंने कहा कि इससे इस बातका पता चलता है कि आजसे ७०० वर्ष पूर्व हिन्दू और जैन मन्दिरोंको तोड़कर उसका प्रयोग कुतुब मीनार और आसपासकी मस्जिदोंको बनानेमें किया गया थ।

उक्त पाषाण मूर्तियां आठ वीं या नवीं शताब्दीकी मालूम होती है क्योंकि वे राजपूत अथवा चंदेल कालीन कलाका प्रतिनिधित्व करती है। इस तरहकी और भी मूर्तियां कुतुबमीनारके आसपास खोदाई द्वारा प्राप्त होनेकी सम्भावना है। कुतुबमीनारके पत्थरोंमें पड़ी दगरोंकी आजकल मरम्मतकी जा रही है। यह मीनार १९८१ में दुर्घटनाके बाद आम जनताके लिए बंद कर दी गयी है। मीनारमें दरार पड़े पत्थरोंको निकालकर नया पत्थर लगाया जा रहा है। कुतुबमीनारकी मरम्मत कार्यमें कुल ३६ लाख रुपये खर्च होनेका अनुमान है। इस समय इसका महला चरण चल रहा है।

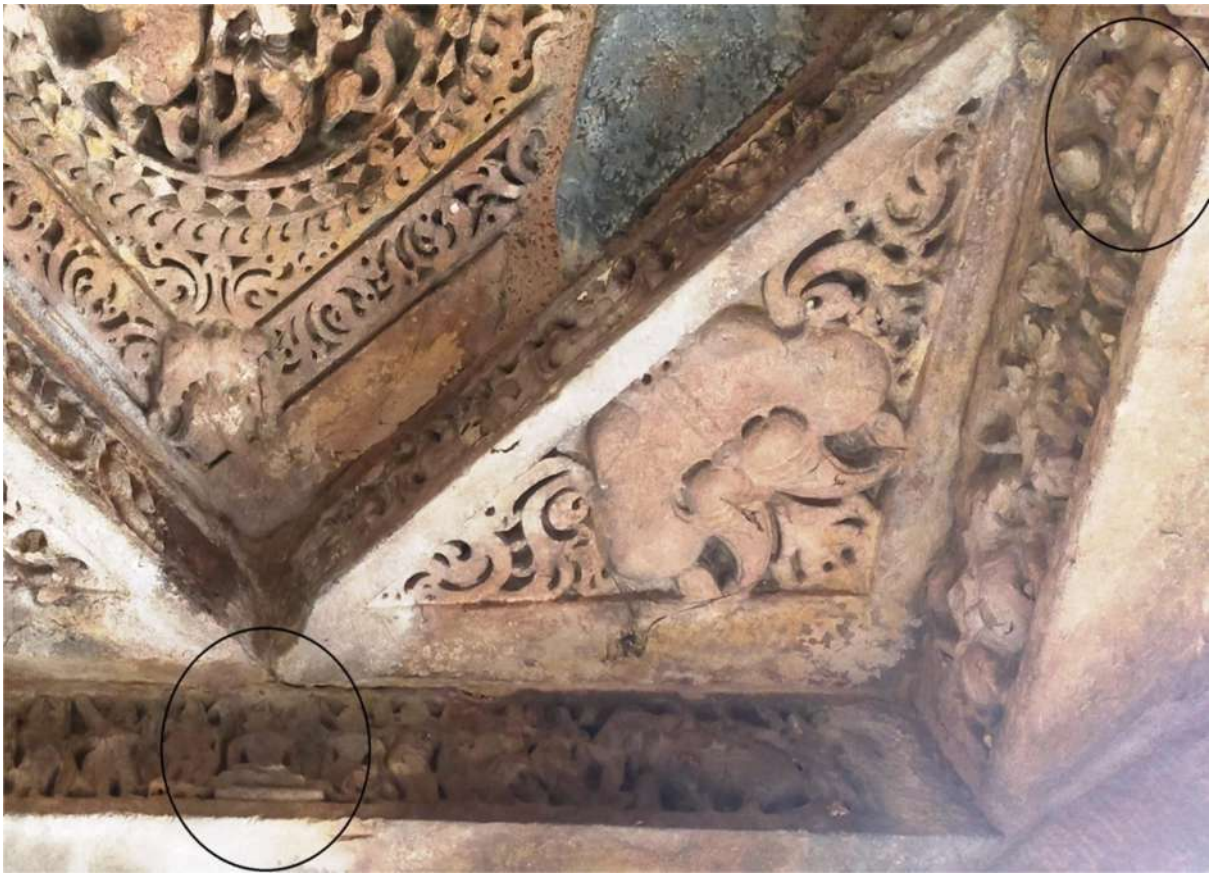

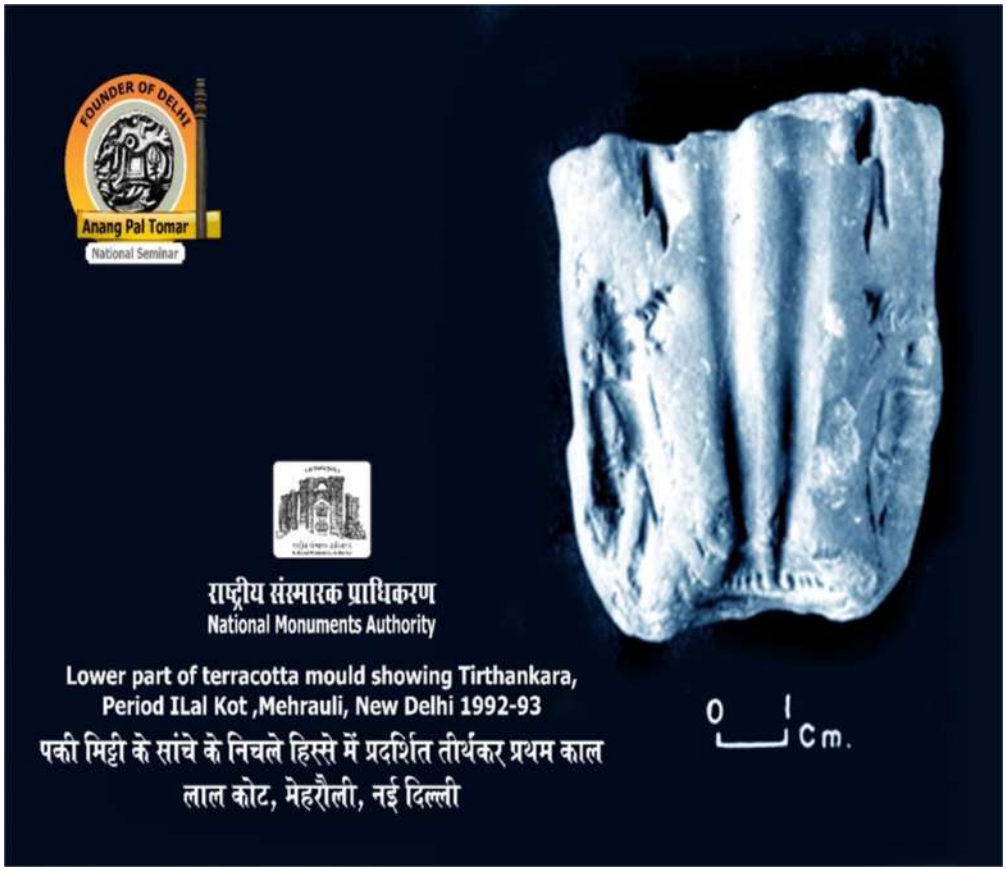
FOUNDER OF DELHI
Anang Pal Tomar
National Seminar
राष्ट्रीय संस्मारक प्राधिकरण
National Monuments Authority
Lower part of terracotta mould showing Tirthankara,
Period ILal Kot ,Mehrauli, New Delhi 1992-93
पकी मिट्टी के सांचे के निचले हिस्से में प्रदर्शित तीर्थंकर प्रथम काल
लाल कोट, मेहरौली, नई दिल्ली
0 1
Cm.

20.12.21

लोक की विसंगतिरहित विषय -वस्तु

--- डॉ. जीवराज जैन

1. लोक की आधुनिक विश्व के साथ भयंकर विसंगतियाँ

i). शास्त्रों के अनुसार हमें बताया जाता है कि हमारी पृथ्वी स्थिर और थाली की तरह चपटी है।

विज्ञानुसार हमारी पृथ्वी अपनी धुरी पर घूमती हुई नारंगी की तरह गोल है।

ii). पहला रक लोक हमारी पृथ्वी के एकदम नीचे अवस्थित है और भरत-क्षेत्र से भी जुड़ा गुआ है।
विज्ञानुसार, मानव निर्मित हजारों उपग्रह हमारी पृथ्वी के चारों तरफ रात-दिन चक्कर लगा रहे हैं। लेकिन ऊपर नीचे पृथ्वी से जुड़े हुए कहीं नरक लोक या स्वर्ग लोक दिखाई नहीं देते हैं। वहाँ तो खाली नीला आकाश ही नजर आता है।

iii). महाविदेह क्षेत्र, जो कि भरत क्षेत्र के उत्तर में अवस्थित है, इस पृथ्वी से जुड़ा हुआ तथा उसका अभिन्न अंग है। यह क्षेत्र मेरु पर्वत के पूर्व-पश्चिम में फैला हुआ है।
विज्ञानुसार हम पृथ्वी के उत्तर-दक्षिण तथा पूर्व-पश्चिम में चारों तरफ घूम कर आते हैं, लेकिन इससे सटा हुआ कहीं कोई महाविदेह-क्षेत्र या नरक या देव लोक नहीं मिलता है।

iv). चन्द्रमा की दूरी पृथ्वी से ज्यादा है, बनिस्पत तारों व ग्रहों की पृथ्वी से दूरी।
विज्ञानुसार चंद्रमा के बनिस्पत ग्रह और तारे पृथ्वी से बहुत ज्यादा दूर हैं।

v). ज्योतिष्क लोक में 10 योजन की ऊँची पट्टी में सभी सितारे बताये गए हैं।
जबकि एक एक सितारे का व्यास 100 योजन से ज्यादा होता है।

इसमें कोई संदेह नहीं हो सकता है कि सर्वज्ञ ऋषियों को भी यत्र -तत्र बिखरी हुई असंख्य निहारिकाओं से भरपूर आधुनिक विश्व का सही ज्ञान अवश्य ही रहा था। तो फिर हमें यह खोजना है कि उन्होंने इस ब्रह्माण्ड, को हमें किस विधि से दर्शाया है कि वह ऐसी ज्यामितीय आकार में दिखाई देता है, जिसके कारण आधुनिक विज्ञान के साथ विसंगतियाँ पैदा हो गयी हैं ?

2. शोध का क्रमिक विकास

विज्ञान के साथ भूगोल - खगोल सम्बन्धी ऐसी विषम विसंगतियों पर विगत 70 - 80 वर्षों से चर्चाएं हो रही हैं। शास्त्रों के विरुद्ध प्रमाण पेश किये जा रहे हैं।
i) एक तरफ सर्वज्ञों की वाणी है, जो गलत हो ही नहीं सकती, जिसका अक्षर अक्षर सत्य माना जाता है। तथा जिस पर हमारी अटूट श्रद्धा टिकी हुई है।
ii) दूसरी तरफ विज्ञान के कई प्रत्यक्ष प्रमाण सहित तथ्य हैं, जो जिनवाणी के विरुद्ध जा रहे हैं।
iii) ऐसी स्थिति में आचार्य लोग करें तो क्या करें? इस विकट स्थिति में मात्र एक ही रास्ता आचार्यों के पास नजर आता है । वे यही फरमाते हैं कि शास्त्रों में उनकी अटूट श्रद्धा होने के कारण, वे उन शास्त्रों को ही सत्य मानेंगे। विज्ञान कुछ भी कहे। लेकिन इस आग्रह पूर्ण उत्तर से हमारी पढ़ी लिखी युवा पीढ़ी के दिमाग में शास्त्रों की सर्वज्ञता के बारे में इतना दुष्प्रभाव पड़ रहा है कि वे धर्म से ही विमुख हो रहे हैं।
iv) फिर भी आचार्यों के पास ऐसा आग्रह रखने के सिवाय, जिनवाणी की तथाकथित रक्षा करने का और कोई दूसरा रास्ता भी नहीं है। उनको नहीं मालूम पड़ रहा है कि प्रत्यक्ष प्रमाणों के साथ ये विसंगतिएँ क्यों हो रही हैं?

3. एक अति महत्वपूर्ण तथ्य

3.1. आधुनिक लोक में भिन्न भिन्न आकार और आकृति की 200 अरब से ज्यादा निहारिकायें हैं। कई निहारिकायें तो 400 अरब तक के तारों और उनके परिवारों से बनी हुई हैं। ऐसे यत्र -तत्र बिखरे हुए खगोलीय पिंडों से भरे विशाल आकाश का एक बहुत ही **छोटा सा** भाग चित्र -1a में दर्शाया हुआ है। लेकिन जैन लोक का जो नक्शा इस चित्र में दिखाया गया है, वह इसके एकदम विपरीत, **सजाया हुआ** सा एक **ज्यामितीय** शंकु आदि के आकार में है। इसके मध्य भाग को भी (चित्र 1b), जिसको मध्य -लोक कहा जाता है, चूड़ियों की आकृति के द्वीप-समुद्र के युग्मों को, कितने **सुन्दर सममिति** में बताया गया है।

इस विषमता में भी एक बात तो **स्पष्ट रूप से माननी** पड़ेगी कि यदि आज हम **विज्ञान के माध्यम** से यह जानते हैं कि **पृथ्वी गोल है और घूमती** है, तो केवलियों को भी विश्व के इस आधुनिक चित्र का ज्ञान तो **अवश्य ही** रहा होगा। इस सच्चाई में भी कोई शंका या गलती नहीं हो सकती है। तब फिर जम्बूद्वीप को चपटा और स्थिर बताने का क्या रहस्य है ? तब एक ही **महत्त्वपूर्ण प्रश्न** उठता है कि उन्होंने फिर वास्तविक विश्व स्वरुप को **किस विधि** से हमें समझाया है, कि वो हमें सममिति और अलंकारिक रूप में नजर आने लगा है ? **बस इसी रहस्य को ढूंढ निकालना हैं।**

3.2. अनुसंधान के लिए एक तीन चरण की रणनीति:
i) प्रस्तुतिकरण की **मूल तकनीक को खोजना**, जिसके द्वारा सर्वज्ञों ने लोक की विषय-वस्तु का वर्णन किया है। .
ii) **दूसरा चरण:** हम उस मूल विधि द्वारा ब्रह्मांड की सामग्री की **फिर से व्याख्या** करेंगे।
iii) **तीसरा चरण:** हम लोक की सामग्री के नए संस्करण की **तुलना, आधुनिक खगोलीय** जानकारियों से करेंगे।

4. सत्य यह है कि **हमने कभी यह *चिंतन ही नहीं किया*** कि व्याख्या पद्धतियाँ क्या हैं और लोक स्वरुप को समझाने की पद्धतियाँ कितने प्रकार की होती हैं? उनको पहले समझने का प्रयास करना होगा। सर्वज्ञों ने लोक स्वरुप की व्याख्या कौनसी पद्धति से की है, उसका निर्णय होना अति आवश्यक है। परम्परा से चली आ रही व्याख्या- पद्धति वास्तव में क्या है ? कहीं यह दोषपूर्ण तो नहीं है ?

इसके लिए हम लकीर से हटकर, इस संभावना पर गहन चिन्तन व शोध करके, समस्या का सही हल निकालने का प्रयास करेंगे। सही पद्धति की जानकारी **हो *जाने के बाद ही* हम सर्वज्ञ प्रणीत लोक के स्वरुप की प्ररूपणा करेंगे। वही सम्यक स्वरुप, हमारी श्रद्धा का विषय होगा।**

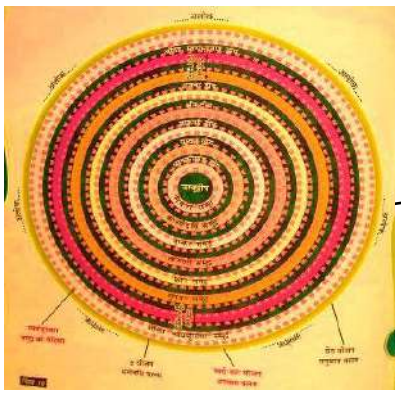

चित्र 1a : प्राचीन और आधुनिक ब्रह्माण्ड का स्वरुप **चित्र 1b : जैन लोक का मध्यलोक**

4.1. लोक को समझाने की विभिन्न विधियाँ

विज्ञान खगोल के बारे में आज जितना जानता है, **केवलियों ने उससे कई गुणा ज्यादा ज्ञान साधारण आदमी को बताया है।** उतने विशाल ज्ञान को, किस प्रकार उपयोगी और लाभदायक रूप में सरलीकरण करके, साधारण आदमी को कैसे क्रमवार, **एक ही झाँकी में समझाया जाए,** वह **विलक्षण तरीका भी केवलियों को** ही आता था।

4.1.1. प्रस्तुतिकरण की तकनीक:

किसी एक पिंड की प्राकृतिक विषय-वस्तु को यानी उसके स्वरुप को, वहाँ के पहाड़, नदियों, समुद्रों और जीवों का वर्णन साधारणतः **"हवाई-प्रक्षेपण" विधि** (Aerial Projection Method- APM) से किया जाता है। **भूगोल का वर्णन** इसी पद्धति से किया जाता है। इस पद्धति में वस्तुओं की सही- सही आकृतियाँ, उनका असली अवस्थान, उनका विस्तार आदि जैसा है. वैसा ही दिखाना संभव होता है। वर्तमान में, परम्परा से यही व्याख्या पद्धति **लोक स्वरुप को समझने में काम** में ली जा रही है। लेकिन हम जो भूगोल, स्कूलों में सीखे हैं, वह मात्र हमारी इस बहुत ही छोटी सी ज्ञात पृथ्वी की जानकारी देता है। यह पृथ्वी पूरे ब्रह्माण्ड में एक बिंदु से भी छोटी है।

तब हमारे सामने मुख्यतः 3 प्रश्न उठते हैं।
i). क्या लोकस्वरूप का वर्णन प्रक्षेपण पद्धति - यानी भौगोलिक पद्धति से हुआ है ?
ii). क्या लोकस्वरूप का वर्णन भौगोलिक पद्धति से किया भी जा सकता है ?
iii). यदि नहीं, फिर कौनसी पद्धति से किया गया है ?

4.1.2. **एक नए सिद्धांत की परिकल्पना**

इन प्रश्नों पर तथा विभिन्न प्रकार की व्याख्या पद्धतियों की विशेषताओं का अनेक दृष्टिकोणों से, **लकीर से हटकर** भी गहन चिंतन-मनन करके व कई प्रकार से विश्लेषण करके, इन सब विसंगतियों का सही कारण खोज कर एक परिकल्पना प्रस्तुत की गयी है।

हम यह जानते हैं कि जब अनेकानेक **(असंख्य)** पिंडों (उनके स्वरुप) के वर्णन की बात हो, जिनके बीच का खाली स्थान, उन पिंडोंसे कई गुणा अधिक हो, तब उन की **प्राकृतिक विषय-**वस्तु का बौधगम्य और लाभदायक वर्णन, **"हवाई-प्रक्षेपण" विधि से करना अव्यावहारिक और अनुपयोगी साबित होता है।** इसके लिए अरबों, खरबों **ड्राइंग** की आवश्यकता होगी। उन खरबों ड्राइंगों के ढेर द्वारा अनंत विषय-वस्तु को ठीक से समझ पाना, मानव मस्तिष्क की क्षमता के परे होगा। उदाहरण के लिए लोक में कितने और **कहाँ** - कहाँ मानव -ग्रह हैं, ऐसी उपयोगी सूचना / जानकारी एक संक्षिप्त और सरल तरीके से, उस अति विशाल **ड्राइंगों के** ढेर से निकालना **असंभव ही होगा।**
चिंतन मनन करने से पता चला कि **उन सबको "एक ही झाँकी में"** दिखाने का सशक्त और वैज्ञानिक तरीका सामूहिकता की पद्धति, यानी **वर्गीकरण और वियोजन** की पद्धति का होता है, जिसको "सांख्यिक-पद्धति" भी कहते हैं। इस पद्धति **में लोक की समग्रता को** समझने के लिए, **लोक के समस्त जीव और अजीव पदार्थों को यानी सभी जीवों को उनकी चारों गतियों में और सभी रूपी अजीव पदार्थों को**, **उनकी सभी पर्यायों (**14) **में वर्गीकरण / समूहीकरण तथा वियोजित करके**, **बौधगम्य और उपयोगी रूप से**, **ज्यामितीय आकार में दर्शाया जाता है।**

यह ध्यान में रहे कि खगोलविद एक तथ्य को **सहज रूप से जानते हैं कि विशाल खगोल (लोक) की भाषा गणितीय भाषा ही होती है। यानी खगोल का "एक ही झाँकी" में पूर्ण बौधगम्य वर्णन तो इसी पद्धति से संभव हो सकता है। हालाँकि लोक के समस्त जीव और अजीव पदार्थों की** बहुत ही अल्प जानकारी के कारण, **विज्ञान अभी तो वैसा तरीका अपनाने में सक्षम नहीं है।**

4.1.3. ***विवरण करने की*** **गणितीय** ***तकनीक :***

वास्तव में सर्वज्ञों ने ब्रह्मांड के ग्रहों, तारों या उपग्रहों आदि का सीधे तौर पर वर्णन नहीं किया है**।** बल्कि **पहले** लोक में उपलब्ध समस्त विषय-वस्तु को **जीव** (जीवित-प्राणी) और **रूपी अजीव** (नॉन-लिविंग पदार्थ,), दो व्यापक उपयोगी समूहों में वर्गीकृत किया है। फिर प्रत्येक समूह को उसकी अलग-अलग पर्यायों में बांटा है। जैसे
 # रुपी अज़ीव पदार्थ: इसकी 14 अलग-अलग पर्यायें मिलती हैं,
i**) 4 द्रष्टव्य पर्यायें** : यानी ठोस, तरल, गैस, आयनिक प्लाज्मा अवस्था, (*सतही क्षेत्र और कुल आयतन के रूप में,* मध्य लोक)
ii) 7 अदृश्य भूमिगत: उच्च दबाव और तापमान पर निर्भर रहने वाली अदृश्य अवस्थाएं है (नरक लोक)
iii) 3 अदृश्य क्वांटम अवस्थाएं : संभवतः यह **BE, FD-Condensates, Excitons** जो कि पदार्थ की 5th, 6th, 7th अवस्थाओं को संदर्भित करती है। (उर्ध्व / देव लोक)

 # जीव पदार्थ: अलग-अलग 4 गतियों में, जैसे देव, मानव, तिर्यंच प्राणी, और नारकिये -पाए जाने वाले जीव है।
इसके अलावा कितने ग्रहों पर आदमी रहते हैं और कितने ग्रहों पर मानव नहीं रहते है। चूँकि हमें मनुष्य का महत्व समझ कर, यह भी बताना है *कि कौन* ***कौन से ग्रहों पर मानव सभ्यताएँ*** *हैं। इसके लिए लेपेखिन सिद्धांत को ध्यान में रखना है कि पूरा विश्व कुछ निहारिकाओं के समूहों की* ***खगोलीय इकाइयों*** *में बंटा हुआ हैं। अतः इन खगोलीय इकाइयों को अलग अलग दर्शाना होगा।*

4.1.4. **तत्कालीन** समय में यह पद्धति सामूहिकता या "ठाणांग पद्धति" या वर्गीकरण **और वियोजन** की पद्धति के रूप में जानी जाती थी। यह व्यापक रूप में काम में आनेवाली सामान्य पद्धति (प्रक्षेपण पद्धति) से मिलती-जुलती जरूर है, लेकिन उसकी तुलना में, विषय-वस्तु को **आसान** और **उपयोगी वर्गों** में विभक्त करके, एक ही झांकी में बोधगम्य कराने में बहुत अधिक क्षमता रखती है। **शास्त्रों में वर्णित** लोक के स्वरुप की व्याख्या इस गणितीय पद्धति से करने से जो स्वरुप सामने आयेगा**,** वो **ही** सही तथा हमारे लिए समझने योग्य और आत्मोन्नति के लिए लाभदायक होगा।

5. पद्धतियों का प्रतिस्थापन और अशुद्धियाँ
5.1. निर्वाण के कुछ शताब्दियों के पश्चात, यह विशेषतावाली **सही पद्धति (गणितीय पद्धति)**, विषम और प्रतिकूल परिस्थितियों और भीषण दुष्काल के पश्चात , परवर्ती आचार्यों के स्मृतिपटल से हट गयी। तब वे उस लोक स्वरुप के वर्णन की व्याख्या अनजानपने में या अज्ञानतावश, व्यवहार में व्यापक रूप से प्रचलित, सामान्य भौगोलिक पद्धति (APM) से करने लगे। तत्कालीन समय में ऐसी कोई जानकारियाँ भी उपलब्ध नहीं थी, जिससे उस गलत पद्धति के उपयोग से उत्पन्न विसंगतियों

को पहचान भी सकें। **करीब 2000 वर्षों से (शायद युग प्रधानाचार्य और वाचनाचार्य बळिस्सह के समय से ही [1]) हो रही उस गलत व्याख्या में** भी, छद्मस्तो को सब कुछ स्वाभाविक और प्रमाणिक ही लगता था। अतः सत्य यह है कि यह अशुद्ध व्याख्या हजारों वर्षों से अबाध रूप से चलती आ रही है।

5.2. यह प्रश्न बार बार पूछा जाता है कि क्या आगमों में कोई संकेत है कि लोक का वर्णन SM पद्धति से हुआ है ?
"आगमों की जब नयी पद्धति (APM) से व्याख्या शुरू हुई थी, तब पुरानी पद्धति (SM) के कई संकेत या पद-चिन्ह रहे होंगे। लेकिन उस पद्धति से अनभिज्ञ रहने के कारण, पिछले 2000 वर्षों के निरंतर उपयोग से वे चिन्ह बहुत धूमिल हुए या मिट गए होंगे। यहाँ कालकाचार्य द्वितीय (453 VN) का एक उदाहरण जो उन्होंने अपने शिष्य सागर को बताया था, ध्यान देने लायक है। उन्होंने कहा [1] कि जिस प्रकार **मुट्ठी भर धूलि** एक स्थान से तीसरे स्थान पर ले जाते, ले जाते कम हो जाती है, वैसे ही आचार्य परम्परा से प्राप्त शास्त्रों के मौखिक अर्थ में से कई पर्याय निकल जाते है, छूट जाते हैं, विलीन हो जाते हैं। फिर भी खोज करने से हमें 3 - 4 मूल पद्धति के उपयोग में होने के प्रमाण मिल गए हैं।"

5.3. अशुद्धियाँ का प्रक्षेपण

यह भी **ध्यान में** रखना होगा कि हजारों साल के लम्बे समय तक अशुद्ध पद्धति के लगातार प्रयोग करने से, समय के साथ लोक की समझ में कितनी तोड़-मरोड़ आई होगी। **ऐतिहासिक घटनाओं** की भौगोलिकता भी आचार्यों द्वारा लोक पर गलत रूप से प्रतिरोपित / स्थापित हुई होगी। आचार्यों की सृजनशीलता और कलात्मकता ने भी लोक के स्वरुप को भौगोलिक और अलंकारिक ढंग से प्रस्तुत करने में अपनी भागीदारी निभाई है। इससे अनजाने में ही कई आकर्षक, लेकिन गलत तथ्य लोक वर्णन में प्रक्षिप्त होते रहे हैं।
वर्तमान में वर्गीकरण या गणितीय पद्धति के नाम से समझी जाने वाली मूल पद्धति के विशिष्ट सिद्धांतों को, यदि आचार्य लोग अपनी दृष्टि में रखेंगे, तो उन प्रक्षिप्त अशुद्धियों को आगम वर्णन और व्याख्या में पहचानने में बहुत आसानी होगी।

6. व्याख्या पद्धतियों का निष्कर्ष :

शास्त्रों में तीन तरह के विषयों का वर्णन मिलता है। i) लोक-स्वरुप का वर्णन ii) ऐतिहासिक घटनाओं का वर्णनऔर iii) ज्योतिष्क गणों का वर्णन ।
विषयानुसार इनके वर्णन की पद्धतियों को इस प्रकार समझना **है**:-
i) लोक स्वरुप का वर्णन मूल रूप से **सांख्यिक पद्धति** (SM) से हुआ है, न कि भौगोलिक पद्धति से (APM)।
ii) ऐतिहासिक घटनाओं का वर्णन करने के लिए **भौगोलिक पद्धति (APM)** का उपयोग किया जाता है। ये घटनाएं वास्तविक भौगोलिक धरती पर ही घटित हो सकती हैं, न कि सांख्यिक पृथ्वी पर। लेकिन जब यह तथ्य स्मृति पटल से मिट गया कि भरत क्षेत्र और वहां की नदियाँ भौगोलिक न होकर सांख्यिक है, तो आचार्यों ने ऐतिहासिक घटनाओं को भी भरत क्षेत्र, जो कि सांख्यिक क्षेत्र है, पर वर्णित किया *है। अलग से उपलब्ध भौगोलिक नक्शों पर नहीं किया है।*
iii) ज्योतिष्क गणों को ज्योतिष्क देवलोक की प्लाज्मा पट्टी पर रखना स्वयं एक विसंगति सिद्ध होती है। (**अनुच्छेद-1/ 3.2)**

7. उपलब्धि और सारांश

7.1. अनुसंधान के तीन चरणों की स्थिति

i) पहला चरण: प्रस्तुतिकरण की **मूल तकनीक को खोजना**, जिसके द्वारा सर्वज्ञों ने लोक की विषय-वस्तु का वर्णन किया है। *इसकी खोज में पाया गया है कि लोक स्वरुप का वर्णन भूगोल की पद्धति से नहीं, बल्कि गणितीय पद्धति में किया गया है।*
इसके कई शास्त्रीय, तार्किक और वैज्ञानिक साक्ष्य प्राप्त हुए हैं। इसकी ख़ास बात यह है कि इससे सर्वज्ञों की वाणी, प्रत्यक्ष प्रमाणित वैज्ञानिक तथ्यों के परिप्रेक्ष्य में सही सिद्ध होती है। शास्त्रों में कुछ भी फेर बदल करने की, या कोई नयी कल्पना जोड़ने की आवश्यकता नहीं है। हमें केवल अपने देखने का नजरिया भूगोल से गणित में बदल देना है।

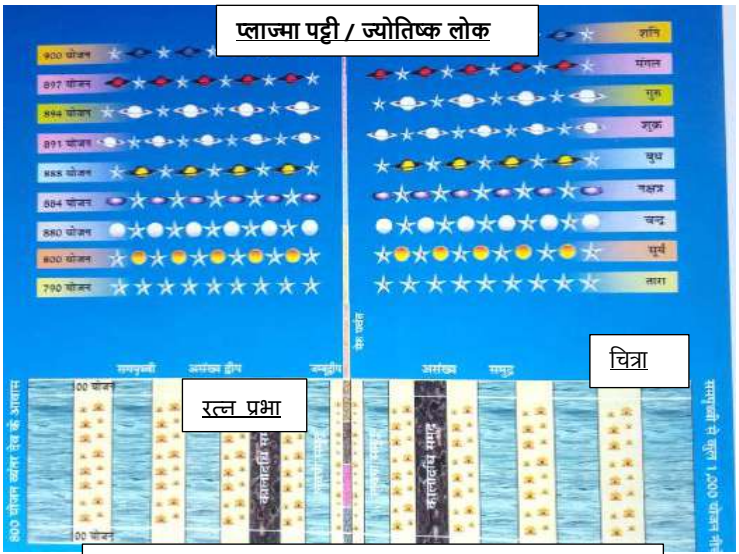

चित्र 2: प्लाज्मा पट्टी / ज्योतिष्क लोक की व्यवस्था

इससे पूरे लोक का सही **मूल गणितीय स्वरुप** दिखाए देगा। अतः लोक स्वरुप की नयी व्याख्या करने और समझने में विद्वान और महान आचार्यों को विलम्ब नहीं करना चाहिए। .
ii) **दूसरा चरण:** हम उस मूल विधि द्वारा ब्रह्मांड की विषय-वस्तु की **फिर से व्याख्या** करेंगे।

नयी व्याख्या करने से पता चलता है कि विसंगतियाँ आश्चर्य ढंग से अपने आप ***विलुप्त*** *हो जाती हैं।*
iii) **तीसरा चरण:** हम सब मिल कर लोक की बहु-आयामी समग्र सामग्री का नया संस्करण निकालेंगे। फिर उसकी **तुलना आधुनिक खगोलीय** जानकारियों से करेंगे। इसमें कई ऐसे तथ्य भरे हुए हैं, जो विज्ञान की जानकारियों से परे होंगे। *इस चरण का काम प्रगति पर है। यह दीर्घगामी योजना है। कई नयी टीमों को जुड़ना चाहिए।*
7.2. सबसे **बड़ी उपलब्धि** यह है कि जिनवाणी की अब तक हो रही परम्परागत आशातना और खंडन से समाज को जो **भयंकर हानि** हो रही थी, उससे अब आसानी से बचा जा सकेगा।

7.3. हालाँकि इस सत्य को सर्व व्यापक रूप से **स्वीकार करने और उसमें वांछित बदलाव लाने में अभी सबसे बड़ी बाधा** है, रूढ़िवादिता और हमारा परम्पराओं का आग्रह और उनकी मजबूत पकड़। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि जैन **समाज को इस** ऐतिहासिक कार्य की पूर्णाहुति के लिए अभी **मजबूत एकता और समन्वयात्मक नेतृत्व** की आवश्यकता है।

7.4. इस दिशा में एक अति ही महत्वपूर्ण प्रगति यह हुई है कि **ता. 31. 08. 21 को चारों घटकों के आचार्यों** और प्रमुख विद्वान संतों* ने झूम पर मीटिंग में आपस में विचार-विमर्श कर चार **सामूहिक निर्णय** इस प्रकार दिए हैं:-

i). हम इस गणितीय पद्धति को सही मानते हैं।
ii) इससे भूगोल-खगोल के साथ हो रही लोक की विसंगतियां भी समाप्त हो जाती हैं।
iii) इसमें आगम के विरुद्ध कुछ नहीं है।
iii) अब यहाँ रुकना नहीं है। आगे बहुत काम करने की जरूरत है। शोध के काम को आगे बढ़ाते रहना चाहिए।"

इन **सामूहिक निर्णयों** की महत्ता किसी भी प्रसिद्ध **प्राचीन वाचनी** से कम नहीं है।

7.5. **उपरोक्त निर्णय के साथ** इस परिकल्पना को तथा इससे सम्बंधित किताबों को, सभी आचार्यों को भेज कर, इस चातुर्मास काल में उन सभी की राय ली जाए। कोई शंका या जिज्ञासा हो तो वे उनका समाधान पूज्य आचार्य श्री विजय नंदिघोष सुरीजी से या डॉ. जीवराज जी जैन से लेकर, इस महत्वपूर्ण विषय पर अपना **अभिमत और सुझाव** अवश्य व्यक्त करें। उन सबका अभिमत जैन समाज के लिए **अति महत्त्वपूर्ण और आवश्यक समझा** गया है।
(सामूहिक मंच पर शामिल : 1.परम पूज्य आचार्य श्री कनकनंदीजी म. सा., 2.परम पूज्य आचार्य श्री विजयनन्दिघोघ **सूरी** जी म.सा., 3. परम पूज्य राष्ट्रसंत श्री नम्र मुनिजी म. सा., 4. परम पूज्य प्रो. श्री महेंद्र मुनिजी म. सा., 5. पूज्य समणी प्रो. चैतन्य प्रज्ञा जी।)

8. विशेष संदर्भ:

इस संदर्भ में युवाचार्य पूज्य **मिश्रीमल जी** मधुकर ने '**आचारांग सूत्र**', प्रथम श्रुत स्कंध , पाँचवाँ अध्ययन, पंचम उद्देशक/ **सूत्राँक 169,** "**उवेहमाणो अणुवेहमाणं बूया- उवेहाहि समियाए, इच्चेवं तत्थ संधि झोसितो भवति"** के विवेचन में जो **भाव व्यक्त किये** हैं , वे यहाँ अनुकरणीय समझ में आते हैं। श्री आगम प्रकाशन समिति, ब्यावर द्वारा प्रकाशित **'आचारांग सूत्र'** के पाँचवें संस्करण में निम्नोक्त विवेचन मिलता है [5]:

"(*इस* *प्रकार*) **उत्प्रेक्षा** (*शुद्ध अध्यवसाय पूर्वक छानबीन / पर्यालोचन*) करने वाला, उत्प्रेक्षा नहीं करने वाले (*मध्यस्थ भाव से चिंतन नहीं करने वाले*) से विनती करता है - सम्यक भाव, समभाव, मध्यस्थ भाव से उत्प्रेक्षा (पर्यालोचन /छानबीन) करो।"

इस (पूर्वोक्त) प्रकार से व्यवहार में होने वाली सम्यक - असम्यक की **गुत्थी (संधि) सुलझाई** जा सकती है। "
इस पद्धति से (मिथ्यात्व आदि के कारण होने वाली) कर्म संतति रूप संधि तोड़ी जा सकती है।
अतीन्द्रिय (अनधिगम्य) पदार्थों के विषय में तो वह **'तमेव सच्चं** ' का आलम्बन लेकर सम्यक (सत्य) ग्रहण और निश्चय कर सकता है।
किन्तु *(लोक के विषय में)* जो पदार्थ **इन्द्रिय प्रत्यक्ष** है या जो **व्यवहार प्रत्यक्ष** है, उनके विषय में **सम्यक-असम्यक का निर्णय** कैसे किया जाए ? इसके सम्बन्ध में **सूत्रांक 169** की विधि उपयोगी सिद्ध होती **है। "**
------------------------ ----------- ---------------------

सन्दर्भ

[1] आचार्य हस्ती (2001): जैन धर्म का मौलिक इतिहास, भाग -2, सम्यग ज्ञान प्रचारक मंडल , जयपुर
[2] भंडारी नरेंद्र : 31.7. 20 को हुई "लोक समूह" की बैठक का लिखित निर्णय तथा 31. 8. 21 को हुई "लोक शीर्ष समूह" की बैठक का निर्णय।

[3] जंबुद्वीप पण्णत्ति सूत्र: सुधर्मा जैन संस्कृति रक्षक संघ , जोधपुर
[4] Jain J. R. (2020), "Research Uncovers Loka Treasure", Proceedings-2, JAS, अहमदाबाद।
[5] **मिश्रीमल जी** मधुकर: '**आचारांग सूत्र**', प्रथम श्रुत स्कंध , पाँचवाँ अध्ययन, पंचम उद्देशक/ **सूत्राँक 169,** ब्यावर।
अनुच्छेद -1: **सांख्यिक पद्धति** की ऐतिहासिकता **और विशेषतायें** ।
अनुच्छेद -2: इस गणितीय पद्धति को अच्छी तरह से समझने के लिए कुछ अभ्यास।

---------------------------- --------- -----------------

<u>अनुच्छेद -1:</u>

<u>सांख्यिक पद्धति की ऐतिहासिकता और विशेषतायें</u>

1. पाठकवर्ग को यह जानकर **आश्चर्य होगा** कि हमारे `आगमकारों' ने साँख्यिक पद्धति का **कई स्थलों पर उपयोग** किया है। लेकिन बिना इस पद्धति का नाम लिए ही, उसका उपयोग कर लिया गया था। लोगों को भी इस पद्धति से समझाए गए तथ्य आसानी से समझ में आ जाते थे। दर असल **जहाँ कहीं भी** असंख्य या अनंत वस्तुओं के विभिन्न लक्षणों को हमें ठीक से, अनुक्रम से समझाने की आवश्यकता हुई, तो उन्होंने बड़ी ही कुशलता से उन लक्षणों का **वर्गीकरण** और वियोजन करके, **बिना** इस पद्धति का **कहीं नाम लिखे**, बड़ी सहजता से इसका उपयोग करके हमें समझा दिया है। हमें पता ही नहीं चलता है कि उन्होंने **इस पद्धति का उपयोग कर डाला** है। देखिये **कुचिकर्ण** का **उदाहरण**।
उसी प्रकार **"जीव"** और **"अजीव"** को उनकी **पर्यायों की अपेक्षा** से वर्गीकृत करके, इतने विशाल **लोक** की सम्पूर्ण विषय-वस्तु के स्वरुप को, जितने आसान और **'एक ही झाँकी'** के रूप में समझाया गया है, उससे स्पष्ट मालूम होता है कि यह **क्षमता मात्र केवलियों** में ही हो सकती है। यह काम छद्मस्तो की कल्पना- शक्ति से तो बहुत परे नजर आता है। लोक-स्वरुप को मूल-पद्धति से समझने के बाद तो, इस पर आधुनिक वैज्ञानिकों को भी आश्चर्य होता है।
कर्म शास्त्रों में तो इस गणितीय पद्धति का उपयोग अनेक जगहों पर किया गया है।

2. इस पद्धति के उपयोग का एक साधारण उदाहरण :
इस पद्धति को भी ठीक से समझने के लिए *विशेष **आवश्यक भाष्य*** में **कुचिकर्ण** का दृष्टांत दिया गया है। भरत क्षेत्र के मगध देश में **कुचिकर्ण** नाम का गृहपति रहता था। उसके पास बहुत गायें थी। उन्हें चराने के लिए बहुत से ग्वाले रखे हुए थे। हजार से लेकर दस हजार गायों तक के टोले बनाकर उसने ग्वालों को सौंप दिया। गायें चरते चरते जब आपस में मिल जाती, तो ग्वाले झगड़ने लगते। वे अपनी गायों को पहचान नहीं सकते। इस कलह को दूर करने के लिए सफ़ेद, काली, कबरी आदि अलग अलग रंग की गायों को अलग अलग टोले बनाकर ग्वालों को सौंप दिए। इसके बाद उनमें कभी झगड़ा नहीं हुआ।
इसी प्रकार सजातीय **सजीव और निर्जीव** पदार्थों के समुदाय की भी वर्गीकृत व्यवस्था कर दी गयी है। गायों के स्वामी कुचि कर्ण के तुल्य सर्वज्ञों ने ग्वाल रूप अपने शिष्यों को गायों के समूहरूप, दोनों प्रकार के पदार्थों के स्वरुप को अच्छी तरह समझाने के लिए पदार्थ-अवस्थाओं के रूप में विभाग **'वर्गीकरण'** कर दिया।

<u>3. वर्तमान स्थिति</u>
3.1. कालान्तर में मूल पद्धति के स्मृति पटल से हट जाने के बाद, व्याख्याओं, रचनाओं तथा परवर्ती ग्रंथों की विवेचनाओं में अनेक नई बातें जुड़ गयी हैं।
कुछ बातें ऐसी हैं (ज्योतिष), जिनका मूल मान्यता से कोई साम्य भी नहीं है, वस्तुतः इन भ्रांत- मूलक रूढी / परम्परागत पद्धति के कारण, आगमिक कथन को सही रूप से समझ पाना ही मुश्किल हो गया है। यानी आगमों में वर्णित "लोकस्वरूप", इन भ्रांतियों यानी निराधार विचारधाराओं से अत्यंत धूमिल और ओझलसा हो गया है।
पारंपरिक विधि, जिसे तकनीकी रूप से हवाई प्रक्षेपण विधि कहा जाता है, वास्तव में दिन-प्रतिदिन की गतिविधियों में आम उपयोग में रही है। इतिहास के अनुसार एक निश्चित अंधेरी अवधि के बाद, स्मृति पटल से यह तथ्य मिट जाने से कि ग्रंथों में लोक का वर्णन सांख्यिक पद्धति में हुआ है न कि APM में, लोक की व्याख्या भौगोलिक पद्धति से होने लगी थी।

3.2. ज्योतिष-गण के घटकों की सांख्यिक लोक में **स्थापना**
ज्योतिष्क घटकों का लोक की ज्योतिष पट्टी में अवस्थान, जहाँ पर वर्गीकरण के सिद्धांत के अनुसार केवल आयोनिक प्लाज्मा ही होना चाहिए, **परवर्ती आचार्यों द्वारा** भौगोलिक पृथ्वी के सापेक्ष उनके गुरुत्वाकर्षण प्रभाव के आधार पर तथा फलित ज्योतिष के अभ्यास के लिए अति आवश्यक **ज्योतिष्क घटकों** के आपसी प्रभाव की सापेक्ष गति और बदलती स्थिति की गणना करने को सरल और सुसाध्य बनाने के लिए निश्चित किया गया है [4]। **चित्र 2** में चन्द्रमा को सूर्य से तथा मंगल ग्रह को बृहस्पति ग्रह से दूर दर्शाया गया है। **अतः स्पष्ट है** कि सांख्यिक लोक की प्लाज्मा पट्टी में **बैठाने के कारण** उनका वास्तविक खगोलीय आकार और दूरियों से **सीधा सम्बन्ध** नहीं हो सकता है।

लोक के **वर्गीकरण सिद्धांत** के अनुसार, उनको उस पट्टी पर बैठाना स्वयं ही एक विसंगति है। दूसरी विसंगति तब हुई, जब **लुप्त समझवश** नाम साम्यता के कारण ज्योतिष्क गणों को ही **ज्योतिष-देव** समझा जाने लगा [4]।

3.3. ऐतिहासिकता

हालाँकि यह गहन शोध का विषय है कि यह संक्रमण कब हुआ, लेकिन अभी जो इतिहास में उपलब्ध तथ्य है [1], उन की प्रारंभिक जांच से पता चलता है कि निम्नलिखित तत्कालीन आचार्यों के विशिष्ट गुणों / लक्षणों और प्रतिभावों के अनुसार, संभावित संक्रमण की अवधियाँ इस प्रकार हो सकती हैं:-

संक्रामण स्थिति	आरम्भ	समाप्त
सांख्यिक पद्धति में भौगोलिक पद्धति का संक्रमण	***आर्य बलिस्सह*** (327 VN*)	***आर्य समुद्र*** (414 VN)
फलित ज्योतिष का अभ्यास। ज्योतिष गणों की दीप्ति पट्टी पर स्थापना	***कलिकाचार्य –2*** (453 VN)	***आचार्य खापुट / सिद्धसेन*** (500 VN)

VN = Vir Nirvan started from 527 BC, i.e. after the Nirvana of Mahavira

4. प्रक्षेपण पद्धति की अपेक्षा साँख्यिक पद्धति की महत्त्वपूर्ण विशेषतायें

गणितीय (सांख्यिक) विधि से व्याख्या करते वक्त या व्याख्या समझते वक्त हमें सांख्यिक पद्धति की निम्नलिखित बिंदुओं के क्षेत्रों में, भूगोलीय पद्धति की तुलना में पाई जानेवाली कमियों / अप्राप्त सूचना को ध्यान में रखना अत्यावश्यक होगा। गणितीय पद्धति में **सामूहिकता के कारण** निम्नलिखित के बारे में **सूचनायें उपलब्ध नहीं** होती हैं।

i.) भौगोलिक वस्तुएँ (features) : परिमाण / विस्तार (size) :
ii) आकार : कटा, छंटा,
iii) गतिएँ : घूर्णन, परिक्रमा, परिवार के साथ गति,
iv) अवस्थान : वास्तविक या **सापेक्ष अवस्थान**? (location) और दिशाएँ: पूर्व, उत्तर का मतलब गायब
v) आपसी दूरियाँ (Mutual Distances)

<u>अनुच्छेद - 2: इस गणितीय पद्धति को अच्छी तरह से समझने के लिए कुछ अभ्यास:</u>

1. लोक किस प्रकार दर्शाया जाता है ? इसका वर्णन दो चरणों में किया जाता है।

<u>i). पहला चरण : खगोलीय पिंड़ों</u> का वर्णन: **<u>'हमारी पृथ्वी</u>** ' इसके थल और जल के क्षेत्रों को अलग अलग इकट्ठा करके सामूहिक रूप से चूड़ी के आकार में दिखाया गया है।

चित्र-3a : पृथ्वी के जल-थल का एक सपाट धरातल पर भौगोलिक प्रक्षेपण

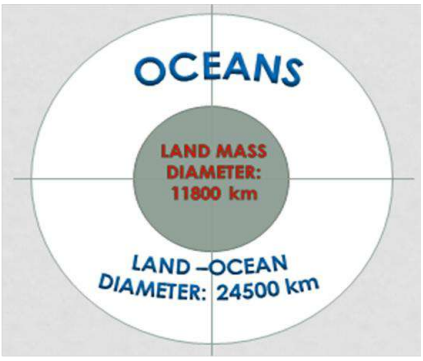

चित्र-3b: उसी जल-थल का <u>सांख्यिक</u> पद्धति में रूपांतरण

2. दूसरा चरण : भौगोलिक महाद्वीप, पहाड़ आदि की आकृतियों का रूपांतरण

a) भौगोलिक पृथ्वी के महाद्वीपों और महासमुद्रों की आकृतियों का गणितीय चार्ट में रूपांतरण **चित्र-3a,** 3b.)

भौगोलिक नक्शा **गणितीय वलय चार्ट**

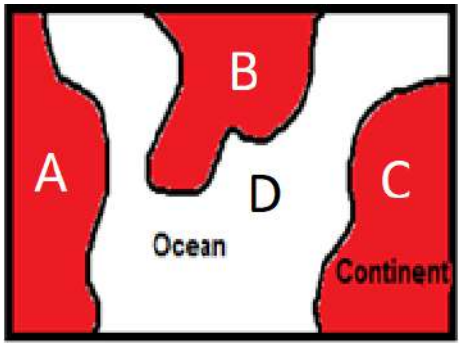

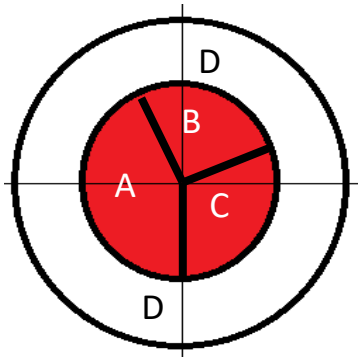

चित्र : 4 a : महाद्वीप A B C और समुद्र D का नक्शा **चित्र : 4 b: इन क्षेत्रों का गणितीय आकार**

नोट : उपरोक्त उदाहरण से यह स्पष्ट हो जाता है कि जम्बूद्वीप का गणितीय वलय चार्ट एक **हिस्टोग्राम** ही है। इसका भरतक्षेत्र, हमारी पृथ्वी ग्रह के जमीनी क्षेत्र (महाद्वीपों) को उसी प्रकार दर्शाता है, जैसे उपरोक्त में भौगोलिक जमीनी क्षेत्र (**चित्र: 4 a)** A, B, C को सामूहिक रूप से **चित्र: 4 b में** ज्यामित्तीय गोलाकार रूप में दर्शाता है। तथा समुद्र D को ज्यामितीय चित्र में एक वलय के रूप में दर्शाता है।

b). एक महाद्वीप के भौगोलिक पहाड़ और नदियें के लक्षणों का गणितीय आकार में (समान आयतन) रूपांतरण (चित्र 5a, 5b)। नई आकृतियाँ बिलकुल भिन्न प्रकार की हैं। भौगोलीय विषय-वस्तुओं, जैसे महाद्वीप, पहाड़ आदि की आकृतियाँ स्पष्ट रूप से उनकी गणितीय आकृतियों से भिन्न होती है।

एक महाद्वीप के भौगोलिक पहाड़ और नदियों के लक्षणों का गणितीय आकार में (समान आयतन) रूपांतरण। नई आकृतियाँ बिलकुल भिन्न प्रकार की हैं।

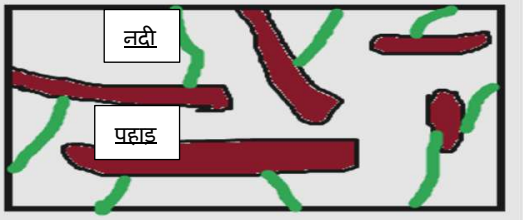

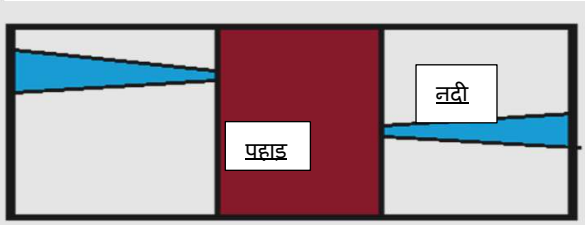

चित्र 5 a : भौगोलिक नक्शा (प्रक्षेपण विधि) हरे रंग में नदियों का और भूरे रंग में पहाड़ों का वास्तविक अवस्थान और आकृति ।

चित्र 5 b : सांख्यिकी चार्ट : सामूहिक रूप में ज्यामितीय आकार में दर्शायी गई सांख्यिकी नीली नदी (2) और भूरा पहाड़ (मान्य कार्य)।

उपरोक्त उदाहरण से यह स्पष्ट हो जाता है कि गणितीय भरतक्षेत्र पर हमारी पृथ्वी ग्रह के सभी पहाड़ों को सामूहिक रूप से **एक गणितीय पहाड़** (वैताढ्य पर्वत) के रूप में उसी प्रकार दर्शाता है, जैसे उपरोक्त में भौगोलिक जमीनी क्षेत्र (महाद्वीप) चित्र 5a के सभी पहाड़ों को, सांख्यिक चित्र 5b में एक सामूहिक गणितीय पर्वत के रूप में दर्शाया गया है।

उसी तरह जमीनी क्षेत्र की सभी **भौगोलिक नदियों** को (चित्र 5a), सामूहिक रूप से **दो गणितीय** नदियों (आभासी नदियाँ) के रूप में चित्र 5b में दर्शाया है। ये गणितीय पहाड़ के दोनों विपरीत किनारों से निकल कर ज्यामितीय आकार में बहती हुई, गणितीय समुद्र में गिरती हुई दिखाई जाती हैं। चूंकि ये सामूहिक नदियें हैं, अतः उद्गम स्थल भी आभासीय और बहुत चौड़ा

होता है। गणितीय भरत क्षेत्र की गंगा और सिंधु नदियाँ भी इसी प्रकार की दो आभासी नदियां हैं। वास्तव में तो जंबूदकीप की नदियाँ, जमीन और पहाड़ **नाम-निक्षेप** से, न कि भाव निक्षेप से वर्णित हैं।

3. **क्या प्रमाण है कि यह सांख्यिकी तरीका (SM), आम आदमी को ज्ञात था ?**

i). यह विधि गाथापति कुचिकर्ण की तरह (**अनुच्छेद -1**) साधारण व्यक्तियों में भी प्रचलित थी। उन्होंने अपनी हजारों गायों का सफल प्रबंधन इस पद्धति के उपयोग से किया था ।

ii). विभिन्न प्रकार के पुद्गलों और कर्मों (वर्गणाओं) की अनंत संख्याओं और पर्यायों को समझाने में इस वर्गीकरण और वियोजन पद्धति के व्यापक उपयोग के उदाहरण मिलते हैं।

iii). जम्बूद्वीप की भौगोलिक भूमि, पर्वत और नदियों के आकार, आकृति के विवरण/ लक्षणों स्पष्ट रूप से प्रमाणित करते हैं कि ये सब सांख्यिकी पद्धति में दर्शाये गए हैं, क्योंकि ये प्रक्षेपण विधि (APM) की आकृतियों से भिन्न प्रकार के हैं।

iv). स्थुलिभद्र के युग के दौरान, पृथ्वी के भौगोलिक मानचित्र, लगभग आधुनिक मानचित्रों के समान ही थे तथा वे जम्बू-द्वीप और लोक के मानचित्रों के साथ साथ उपलब्ध थे। लेकिन उन्होंने कभी नहीं बताया कि भौगोलिक नक्शे गलत हैं।

4. लोक की विषय-वस्तु को उपयोगी और व्यापक तरीके से पेश करने की तकनीक

निम्नोक्त दो प्रकार के विश्व के डेटा को उपयोगी समूहों में वर्गीकृत और वियोजित किया गया है:

i) दृश्यमान विश्व: क) मानव ग्रह और ख) मानव-रहित ग्रह ।

ii) अदृश्य दुनिया: क) श्रेष्ट वैक्रिय शरीरी जीवों वाली पृथ्वियाँ , ख) निकृष्ट वैक्रिय शरीरी जीवों वाली पृथ्वियाँ ।

इसका अर्थ है कि **जीवों को उनकी 4 गतियों** (Destination) में वर्गीकृत करना और **अजीवों को उनकी 14** पर्यायों में वर्गीकृत करना। **जैसे** 4 ज्ञात (ठोस, तरल, गैस, प्लाज्मा) पदार्थ- पर्यायें, 3 कण संघनन पर्यायें (जैसे आइंस्टीन-बोजोन आदि **शून्य के नजदीकी तापमान**), **और 7 उच्च दबाव और उच्च तापमान (भूमिगत द्रव्य) पर मेटास्टेट वाले पदार्थ** ।

5. सांख्यिकीय पर्वत की आकृति और ख़ास विशेषताएं

5.1. आगमों में पाए जाने वाले पहाड़ों को सांख्यिक पद्धति से प्रस्तुत करने का यहाँ एक वास्तविक उदाहरण मिलता है। यह पद्धति को समझाने के लिए एक दिलचस्प उदाहरण है।

जंबुद्वीप पण्णत्ति आगम [3] में वैताढ्य पर्वत का वर्णन दिया गया हैं। वक्षस्कर पर्वत के लिए श्लोक संख्या 1 / 12 प्राकृत और हिंदी में नीचे दी गयी है। इस को स्लैब के ज्यामितीय रूप में दिखाया गया है।

इस विवरण के अनुसार, **वैताढ्य पर्वत** का चित्र- 6, नीचे दिया गया है। यह सपाट आयताकार पट्टियों के रूप में दर्शाया गया है, जो कि सांख्यिक पद्धति को ही दर्शाता है।

परिक्खेवेणं, रुयगसंठाणसंठिए, सव्वरययामाए,(अच्छे, सण्हे, लट्ठे, घट्ठे, मट्ठे, णीरए, णिम्मले, णिप्पंके, णिक्कंकडच्छाए, सप्पभे, सस्सिरीए, पासाईए, दरिसणिज्जे, अभिरूवे, पडिरूवे।

हिंदी

१६

वैताढ्य पर्वत रुचक संस्थान–गले में धारण करने योग्य आभरण विशेष के आकार में विद्यमान है। वह संपूर्णतः रजतमय है, स्वच्छ, चिकना, घिसा हुआ सा, तरासा हुआ सा है, रज, मैल, कर्दम एवं कंकड़ रहित है। वह आभा, कांति एवं उद्योत–द्युतियुक्त है। चित्त में हर्षोत्पादक, दर्शनीय, सुंदर और आकर्षक है।

जाहिर है कि कोई भौतिक पर्वत ऐसे ज्यामितीय आकार का नहीं हो सकता है, जो कंकड़ और मिट्टी से मुक्त हो। इसकी ख़ास विशेषताएँ इस प्रकार वर्णित है : सीधी खड़ी दीवारों की तरह, बिना किसी धूल, गंदगी, कंकड़, और घनीभूत होने के, पूरी तरह से सादे बफ़्ड, पॉलिश और चिकनी सपाट सतहों के साथ । इसकी ज्यामितीय आकृति को बड़े गर्व का स्थान दिया जाता है जब वे कहते हैं कि यह गले में **हार के रूप में** पहनने लायक है।

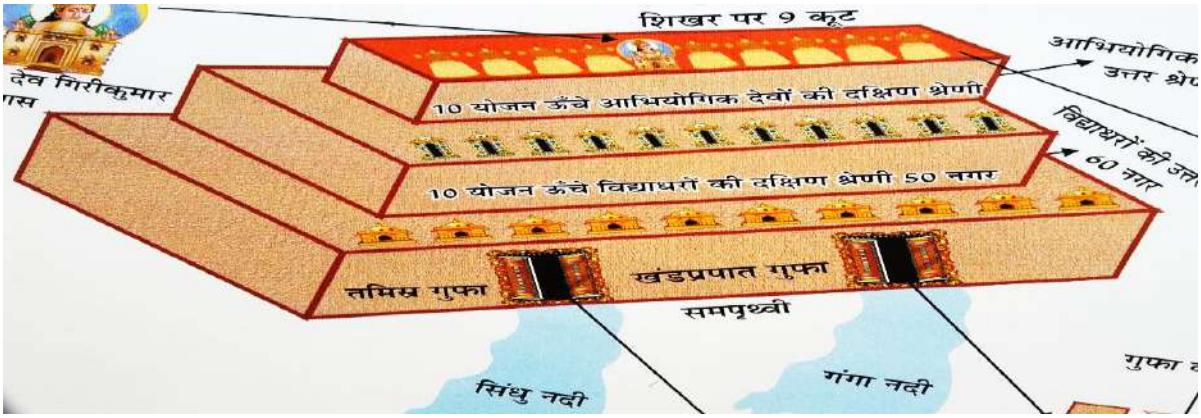

चित्र 6: वक्षास्कार वैताढ्य पर्वत [3]. (जंबुद्वीप पण्णत्ति , श्लोक संख्या 1 / 12)

इसी प्रकार भूमि की सतह और नदियों का वर्णन भी स्पष्ट रूप से सांख्यिक पद्धति में हुआ मिलता है।

5.2. गणितीय पद्धति से विसंगतियाँ किस प्रकार अपने आप गायब हो जाती है?

विसंगति: *विज्ञान के अनुसार, पृथ्वी गोलाकार है और अपनी धुरी पर घूमती है।*

समाधान:

i) गणितीय पद्धति की 5 ख़ास **गैर-मौजूद विशेषताओं** के अनुसार, भौगोलिक पिंड के इन लक्षणों की तुलना सांख्यिक पिंड के साथ करना, लोक की सांख्यिकीय पद्धति के दायरे से बाहर है। जैसे, हम जानते हैं कि सांख्यिकीय पिंड से **आकृति** और **घूर्णन** जैसी भौगोलिक जानकारी प्राप्त करना, उपरोक्त निष्कर्षों की वैधता पर टिप्पणी करने के बराबर है। तथा पद्धतियों के बारे में अज्ञानता दर्शाने वाला सवाल है।

ii) हमारी पृथ्वी ग्रह (चित्र-3 a) को सांख्यिक पद्धति से दिखाने के लिए इस के जमीनी क्षेत्र (6 महाद्वीपों) को सामूहिक रूप से केंद्र में थाली के रूप (चित्र-3b) में दर्शाया गया है। सभी समुद्रों के जल को क्षेत्रफल के अनुपात से वलय के रूप में दर्शाया गया है। इस प्रकार से यदि 3 मानव ग्रहों को एक साथ में दिखाना हो, तो केंद्र की थाली, उनके सामूहिक जमीनी क्षेत्र को तथा उसका वलय उनके सभी समुद्रों के जल को दर्शायेगा। इस थाली और वलय रूपी सामूहिक गणितीय पिंड (चित्र-3b) में यदि भौगोलिक मानव ग्रहों के 5 ख़ास **गैर-मौजूद** लक्षणों को, यथा हरेक का घूर्णन, आकृति, आपसी दूरियां आदि ढूंढने का प्रयास करेंगे, तो वह हमारी अज्ञानता ही होगी।

गणितीय पिंड के साथ (चित्र-3b) विसंगतियाँ रह ही नहीं जाती है। कारण स्पष्ट है, क्योंकि कि भौगोलिक विसंगतियां, गलत पद्धति से लोक की व्याख्या करने के कारण ही तो उत्पन्न हुई हैं।

JAIN BHAWAN PUBLICATIONS

P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007

English :

1. *Bhagavatī-Sūtra* - Text edited with English translation by K.C. Lalwani in 4 volumes ;
   - Vol - I (*śatakas 1 - 2*) Price : Rs. 150.00
   - Vol - II (*śatakas 3 - 6*) 150.00
   - Vol - III (*śatakas 7 - 8*) 150.00
   - Vol - IV (*śatakas 9 - 11*) ISBN : 978-81-922334-0-6 150.00
2. James Burges - *The Temples of Śatruñjaya,* 1977, pp. x+82 with 45 plates Price : Rs. 100.00
   [It is the glorification of the sacred mountain *Śatruñjaya.*]
3. P.C. Samsukha -- *Essence of Jainism* ISBN : 978-81-922334-4-4
   translated by Ganesh Lalwani, Price : Rs. 15.00
4. Ganesh Lalwani - *Thus Sayeth Our Lord,* Price : Rs. 50.00
   ISBN : 978-81-922334-7-5
5. *Verses from Cidananda*
   translated by Ganesh Lalwani Price : Rs. 15.00
6. Ganesh Lalwani - *Jainthology* ISBN : 978-81-922334-2-0 Price : Rs. 100.00
7. G. Lalwani and S. R. Banerjee- *Weber's Sacred Literature of the Jains*
   ISBN : 978-81-922334-3-7 Price : Rs. 100.00
8. Prof. S. R. Banerjee - *Jainism in Different States of India*
   ISBN : 978-81-922334-5-1 Price : Rs. 100.00
9. Prof. S. R. Banerjee - *Introducing Jainism* Price : Rs. 30.00
   ISBN : 978-81-922334-6-8
10. K.C.Lalwani - *Sraman Bhagwan Mahavira* Price : Rs. 25.00
11. Smt. Lata Bothra - *The Harmony Within* Price : Rs. 100.00
12. Smt. Lata Bothra - *From Vardhamana to Mahavira* Price : Rs. 100.00
13. Smt. Lata Bothra- *An Image of Antiquity* Price : Rs. 100.00

Hindi :

1. Ganesh Lalwani - *Atimukta* (2nd edn) ISBN : 978-81-922334-1-3
   translated by Shrimati Rajkumari Begani Price : Rs. 40.00
2. Ganesh Lalwani - *Śraman Samskriti ki Kavita,*
   translated by Shrimati Rajkumari Begani Price : Rs. 20.00
3. Ganesh Lalwani - *Nilāñjanā*
   translated by Shrimati Rajkumari Begani Price : Rs. 30.00
4. Ganesh Lalwani - *Candana-Mūrti,,*
   translated by Shrimati Rajkumari Begani Price : Rs. 50.00
5. Ganesh Lalwani - *Vardhamān Mahāvīr* Price : Rs. 60.00
6. Ganesh Lalwani - *Barsat kī Ek Rāt,* Price : Rs. 45.00
7. Ganesh Lalwani - *Pañcadasī* Price : Rs. 100.00
8. Rajkumari Begani - *Yado ke Aine me,* Price : Rs. 30.00
9. Prof. S. R. Banerjee - *Prakrit Vyākaraṇa Praveśikā* Price : Rs. 20.00
10. Smt. Lata Bothra - *Bhagavan Mahavira Aur Prajatantra* Price : Rs. 15.00
11. Smt. Lata Bothra - *Sanskriti Ka Adi Shrot, Jain Dharm* Price : Rs. 20.00
12. Smt. Lata Bothra - *Vardhamana Kaise Bane Mahāvir* Price : Rs. 15.00
13. Smt. Lata Bothra - *Kesar Kyari Me Mahakta Jain Darshan* Price : Rs. 10.00
14. Smt. Lata Bothra - *Bharat me Jain Dharma* Price : Rs. 100.00
15. Smt. Lata Bothra - *Aadinath Risabdav Aur Austapad* Price : Rs. 250.00
    ISBN : 978-81-922334-8-2
16. Smt. Lata Bothra - *Austapad Yatra* Price : Rs. 50.00
17. Smt. Lata Bothra - *Aatm Darsan* Price : Rs. 50.00
18. Smt. Lata Bothra - *Varanbhumi Bengal* Price : Rs. 50.00
    ISBN : 978-81-922334-9-9

Bengali:

1. Ganesh Lalwani - *Atimukta* Price : Rs. 40.00
2. Ganesh Lalwani - *Śraman Sanskritir Kavitā* Price : Rs. 20.00
3. Puran Chand Shymsukha - *Bhagavān Mahāvīra O Jaina Dharma.* Price : Rs. 15.00
4. Prof. Satya Ranjan Banerjee- *Praśnottare Jaina Dharma* Price : Rs. 20.00
5. Prof. Satya Ranjan Banerjee- *Mahāvīr Kathāmrita* Price : Rs. 20.00
6. Dr. Jagat Ram Bhattacharya- *Daśavaikālika sūtra* Price : Rs. 25.00
7. Sri Yudhisthir Majhi- *Sarāk Sanskriti O Puruliar Purākirti* Price : Rs. 20.00
8. Dr. Abhijit Battacharya - *Aatmjayee* Price : Rs 20.00
9. Dr Anupam Jash - *Acaryya Umasvati'r Tattvartha Sutra* (in press)
   ISBN : 978-93-83621-00-2

Journals on Jainism :

1. *Jain Journal* (ISSN : 0021 4043) A Peer Reviewed Research Quarterly
2. *Titthayara* (ISSN : 2277 7865) A Peer Reviewed Research Monthly
3. *Sraman* (ISSN : 0975 8550) A Peer Reviewed Research Monthly